नाटक की दुनिया

सफ़दर रचित बाल नाटक

नाटक की दुनिया

सफ़दर रचित बच्चों के नाटक

बच्चों के लिए सफ़दर हाश्मी की अन्य पुस्तकें:

दुनिया सबकी (कविता संकलन)

गड़बड़ घोटाला

पेड़

बाग की सैर

बांसुरीवाला

रेड फ्लावर (अंग्रेजी)

आवरण चित्र एक छः वर्षीय बच्चे का है.

चित्रः बिन्दिया थापर

राजा की खोज

चिड़ियों का कोरस:

इस जंगल में तरह-तरह के
जन्तु-जानवर रहते हैं.
अपनी-अपनी बोली में
वे रोते-गाते रहते हैं.

कुछ तो खुश होकर गाते हैं
और कुछ दुखड़े रोते हैं.
कुछ दिन भर मेहनत करते हैं,
कुछ मस्ती से सोते हैं.

राजा के पाजी दरबारी
खूब मजे में रहते हैं.
जंगल के बाकी सब जन्तु
उनके जुल्म को सहते हैं.

बूढ़ा राजा खाऊ-पीर है
खाता है और सोता है.
उसकी बची-खुची झूठन से
सब का गुजारा होता है.

राजा के खाने का जिम्मा
है सियार के कन्धों पे.
रहता है माकूल मुनाफा
ऐसे सारे धन्धों में.
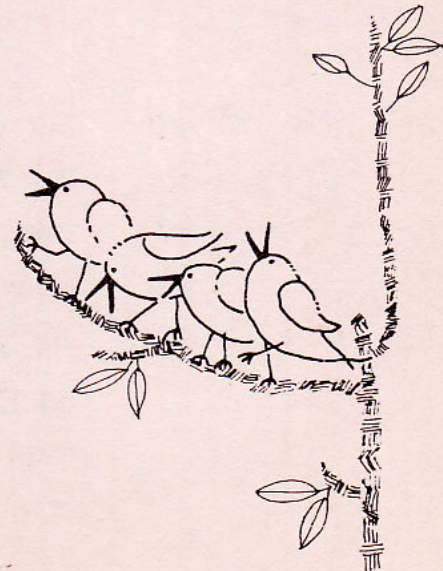
(जंगल का राजा और उसके दरबारी आते हैं. कोरस का गाना जारी रहता है).

धीरे-धीरे उस सियार ने
लगभग खतम किये सब जीव.
अब राजा की भूख मिटाने
और कहां से आवे जीव.

इसी समस्या पर राजा ने
मीटिंग एक बुलाई है.
उसके सब चमचों की टोली
इसी लिए तो आई है.

रंग बिरंगे पंछी हैं हम, मीठे सुर में गाते हैं.
दिल के दर्द को दिल में रखकर, इनका मन बहलाते हैं.

राजा: क्या, क्या कहा?
दरबारी: क्या कहा? क्या कहा?
राजा: दर्द? कैसा दर्द?
दरबारी: कैसा दर्द? कैसा दर्द?
राजा: दाने चुगना, गाने गाना,
दर्द का इसमें काम कहां?

(एक खरगोश दौड़ता हुआ आता है. पीछे-पीछे एक सियार, खरगोश किसी तरह जान बचाकर भागता है. तभी सियार की नज़र राजा और दरबारियों पर पड़ती है, वह खिसिया जाता है.)

सियार: हाय रे! माफ करें हुज़ूर.
राजा: क्यूं बे सियार, कब तक करें खाने का इंतज़ार?
दरबारी: कब तक करें, कब तक करें खाने का इंतज़ार?
सियार: हे जंगल के राजा
जब लगे भूख की आग
तब दें मुझको आवाज़.
पलक झपकते पेश करूंगा
खाना मैं महाराज.

राजाः भूख? यह भूख क्या चीज होती है?

दरबारीः भूख? और हमें लगे? तेरा दिमाग तो ठीक है?

राजाः राजा और भिखारी में
पैदल और सवारी में
अन्तर करना सीख, गीदड़! अन्तर करना सीख.

दरबारीः भूख लगे से खाये भिखारी
राजा मन की मर्जी से.
दुनिया सोये नींद आने से
राजा अपनी मर्जी से.
अन्तर करना सीख, गीदड़! अन्तर करना सीख.

सियारः ठीक, ठीक, ठीक,
ठीक कहा महाराज ने.
कहा एकदम ठीक.

दरबारीः तो फिर?

राजाः कहां है खाना?

दरबारीः कहां है खाना, कहां है खाना?

सियारः बन में खाने की है मार
राजा खाने की है मार.
जंगल में जानवर
अब ढूंढना बेकार, राजा ढूंढना बेकार.
बाहर से जन्तुओं की
इम्पोर्ट दरकार.
राजा इम्पोर्ट करने के लिए
पैसा है दरकार, राजा पैसा है दरकार.
बन में खाने की है मार.

राजाः अपनी चालाकी से बहकाता है तू.
मांग कर एडवांस खा जाता है तू.

दरबारीः बहकाता है, बहकाता है?
हमको मूर्ख बनाता है?

राजाः अभी तूने हमारी शराफत ही देखी है.

दरबारीः हमारा गुस्सा नहीं देखा है, हा, हा, हा.

राजाः पकड़ लो साले को.

जकड़ लो साले को.
खाना लाकर दे न सका है
निगल लो साले को, निगल लो साले को.

(पीछे से "भां-भां" की आवाज आती है सब डर जाते हैं.)

राजा: सेनापति, यह आवाज कैसी?
बाघ: हुम्म!
राजा: है अजीब सी, कभी सुनी नहीं!
बाघ: हुम्म!
राजा: आगे जा, पकड़ के ला!
बाघ: हुम्म!
राजा: हिम्मत न हार, सिपहसालार.
बाघ: हुम्म!

(फिर आवाज आती है.)

राजा: हुम्म-हुम्म करना छोड़ दे वरना खायेगा झापड़.
नहीं है हिम्मत जाने की तो कहीं डूब मर.
बाघ: कभी न हिम्मत हारूंगा मैं, कैसा डरना.
फौज जमा करता हूं, शायद युद्ध हो करना.

(बाघ जाता है.)

भालू: देखा राजा, कैसे भागा करके बहाना!

(आवाज आती है.)

राजा: भालू ठाकुर, तुम ही इसको पकड़ के लाना.
भालू: (बहर-ए-तवील)
ऐ बादशाह-सलामत,
कर दो मुआफ मुझको.
तबियत खराब है मेरी, कर दो मुआफ मुझको.
कांधे में, पीठ में, मेरे पैरों में दर्द है.
दिल में, जिगर में, सीने में, पहलू में दर्द है.

घर पे आराम की है हिदायत मुझे.
जाने की इसलिए दें इजाज़त मुझे.

(जाता है.)

राजा: लो, यह भी सरक गया, अब किया जाये क्या?

(आवाज़ आती है.)

लकड़बग्घे और भेड़िये, तुम ही आओ देख के.

लकड़बग्घा–भेड़िया: स रे ग म प ध नी स.
जान बचा के भाग जा.
भाग, यहां से भाग जा.
स नी ध प म ग रे स.

(जाते हैं.)

राजा: सियार मेरे भाई, अब तुम ही बताओ.
सब तो गये भाग, कुछ तुम ही सुझाओ.

सियार: तुम हो राजा जंगल के, तुम आगे जाओ.
कौन है पाजी, उसको जा करके धमकाओ.
मैं पीछे से चारों ओर नजर डालूंगा.
वक्ते-ज़रूरत तुम को लेकर भागूंगा.

(आवाज़ आती है.)

राजा: ना, ना, ऐसी बात मुंह पर न लाना.
ठीक न होगा आगे राजा का जाना.
तुम आगे जाओ
जाके देख के आओ.
तुमसे सुनेंगे हम पूरा फ़साना.
सोचेंगे फिर कि क्या कदम उठाना.

(राजा जाता है. आवाज़ आती है.)

सियार: क्या करें प्यारे, कि भाग गये सारे.
रह गये हम बेचारे.

राजा भी भागा, चमचे भी भागे
अब हम हैं बिना सहारे.

(खरगोश आता है.)

खरगोशः सीधे रस्ते, सीधी बातें छोड़ के जो चलते हैं.
उल्टे-सीधे चक्कर, गड़बड़-घोटाले करते हैं.
अपने-आप को बहुत चतुर-चालाक समझते हैं जो,
वह अक्सर खुद ही चक्कर में फंस जाया करते हैं.

सियारः मैं फंसूं या न फंसूं, तू जरूर फंस गया बेटे.
फंस गया, फंस गया, फंस गया,
फंस गया खरगोश, तू बेटे फंस गया.
दिन भर जंगल में फिरने से भूख लगी थी भारी.
भूख के मारे अपनी तो बुद्धि ही गयी थी मारी.
लेकिन तुमको देख के मुंह में पानी भर आया है.
कितने दिन से ऐसा खाना नज़र नहीं आया है.

खरगोशः मर गये रे, ये तो मार डालेगा. भागो, भागो, भागो रे.

(जाता है, आवाज़ आती है.)

सियारः क्या करूं मैं राम, रामा क्या करूं मैं.
भाग जाऊं या यहीं रह कर मरूं मैं.
या कहीं छुप जाऊं मैं झाड़ी के पीछे.
हां, यहीं छुप जाऊं मैं झाड़ी के पीछे.

(छुपता है. बैल आता है.)

बैलः चबर-चबर, चबर-चबर चबाओ, भां-भां.
हरी-हरी, हरी-हरी घास खाओ, भां-भां.
खुशी में तुम झूमो, खुशी से तुम नाचो.
भां-भां, भां-भां रंभाये जाओ, भां-भां.

सियारः हा, हा, हा, हा, हा, हा,
क्या मज़ा, क्या मज़ा, क्या मज़ा.
बैल है रंभा रहा, रंभा रहा.
शेर गया, भालू गया, बाघ गया.

इससे डर के भाग गया, भाग गया.
हा, हा, हा, हा, हा, हा,
अब चखाऊंगा मजा.
छोड़ मुझे यूं जाने का.
मौका मिलते ही सज़ा दूंगा.
सज़ा हा, हा, हा.
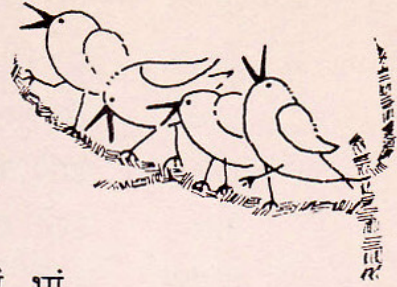
बैल: भां, भां, भां, भईया भां, भां, भां.

सियार: एक तरकीब समझ में आयी. इस बेवकूफ बैल को जंगल का राजा बनाया जाये, और इस जालिम शेर से पीछा छुडाया जाये. यह बेवकूफ मेरे इशारों पर नाचेगा, मैं मन मर्ज़ी व्योपार करूंगा, कीमतें बढाऊंगा, मुनाफा कमाऊंगा, लेकिन पहले जरा इस बैल को नचाया जाये.

सियार: ओ बैल भाई, जंगलों में भटकने की मन में क्या समाई, बैल भाई.
जंगल का राजा,
टुकड़े-टुकड़े, करके तेरा बना देगा खाजा?
कहता है वह राजा, वह खा जाएगा कच्चा.
खून पी जाएगा तेरा बजा देगा बाजा.
ओ बैल भाई,
जंगल में भटकने की क्या समाई.
ओ बैल भाई.

बैल: हाय, हाय, हाय! कैसे भागा जाए रे गीदड़
कैसे भागा जाए?
मौत के मुंह से प्यारे गीदड़ कैसे भागा जाए!
गाड़ी खींच-खींच के भैया,
हुआ था मैं बेजान.
चरते-चरते, यहां मैं आया,
पीछे छोड़ लगाम.
हरी-हरी इस घास को खाकर,
हम तगड़े हो पायें.
लेकिन इस खूनी राजा से,
कैसे जान बचाएं?

हाय, हाय, हाय रे गीदड़, कैसे जान बचाएं!

सियारः अरे! नहीं, नहीं, नहीं,
मैंने यूं ही डराके तुमको, ज़रा किया हैरान.
मेरे रहते कोई तेरी ले न सकेगा जान.
डरने की जरूरत नहीं.

बैलः डरने की जरूरत नहीं?

सियारः तू है शिवशंकर का वाहन,
तेरे कब्ज़े में सारा बन.

बैलः यह शिवशंकर कौन हैं?

सियारः यह भी नहीं जानता?
शिव माने पशुओं के राजा, शिव पशुओं के स्वामी.
शिव रहते कैलास के ऊपर, तू जंगल का प्राणी.
तू उनका वाहन है, तू ही है जंगल का स्वामी.
तू जंगल का स्वामी.

बैलः मैं जंगल का स्वामी!
क्यूं करते हो नादानी?

सियारः नादानी यह नहीं है राजा, रहो अगर चुपचाप.
बीच बीच में भां भां का करते जाओ जाप.
सिंहासन को ग्रहण करें अब करके किरपा आप.
आप रहें चुपचाप, आप रहें चुपचाप राजा!
आप रहें चुपचाप.

बैलः बैठूं?

सियारः हां! हां!

बैलः सच्ची?

सियारः सच्ची.

(बैल चुपचाप सिंहासन पर डरते-डरते बैठता है.)

सियारः भोंदू जैसे बैठे ऐसे, मुंह न तुम लटकाओ.
सींग हिलाकर, भां भां का राग अलापे जाओ.

बैलः भां, भां, भां, भां, भां भां. . .

सियारः बस, बस, बस,
बंद करो अब भां भां अपनी, सबको लाऊं बुलाके.

शिव के वाहन के, राजा बनने की खबर सुना के.
सब को बोलूं, शिव के हुकुम से बैल हुआ है राजा.
क्या भालू, क्या शेर बघेरे सब ही तेरी परजा.
जो न तेरे हुकुम को माने, तुझको न स्वीकारे.
उसके खाने पर पाबंदी लगवा दूंगा प्यारे.

(सियार चला जाता है. खरगोश जो थोड़ी देर पहले छुप गया था और बातें सुन रहा था—बोल उठता है.)

खरगोशः बैल तुम्हारे कान पकड़कर सिंहासन पर बैठाया.
असली राज करेगा गीदड़, यह ना तुमको बतलाया.
पाजी है मतलबी है गीदड़
ऐसा जाल बिछाएगा.
उसके चंगुल में जंगल का
हरेक जीव आ जायेगा.

आवाजें: बोलो पशुपति की जय!
बोलो शिववाहन की जय!
बोलो बैल राज की जय!
बोलो महाराज की जय.

सियारः आप तो महाराज हैं!
आपके हम दास हैं!
दासों में खास हैं!
आप के हम दास हैं.
एक बार ज़ोर से दहाड़ो.

बैलः भां, भां, भां, भां.

(सब डरते हैं.)

सियारः घबराओ नहीं, महाराज खुश हैं,
खुशी में गा रहे हैं.
जब डरके मारे तुम्हारी जान निकल जाए,
या हार्ट फेल हो जाए, तब समझना कि
राजा नाराज़ हैं.
जो कोई चाहे बढ़िया खाना
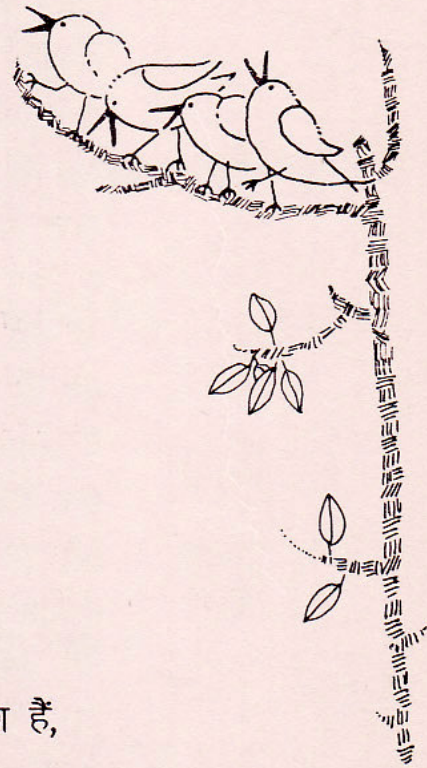
बढ़िया दे नज़राना.
मोटी थैली, महंगे तोहफे
घर से लेकर आना.
और करे जो कोई चुगली,
कोई शिकायत लाए.
पहले ही मैं साफ बता दूं,
उसकी शामत आए.

कोरसः आप तो महाराज हैं.
आपके हम दास हैं.
खाने पीने के लिए, आप के मोहताज हैं.

खरगोशः (आगे आकर.)
हे महाराज, महाराज, हे महाराज, महाराज,
बेसहारों के सहारे, तुम ही हो महाराज.
वाहन हो तुम नीलकंठ के, तुम ही हो बनराज.
जन्तुओं के प्राण स्वामी, अब तुम्हारे हाथ.
हे महाराज . . . . .

बैलः सब ही वाहन कहते हैं. तो वाहन हूं मैं भाई.
मूरख था जो इत्ते दिनों समझ में न आई.
हूं अगर मैं शिव का वाहन, गीदड़ को क्यूं मानूं.
जो मुझे धमकाये, उसे सींग से मैं मारूं.
सब ही वाहन . . . . .
मैं जंगल का राजा भइया भां भां भां
खूब करुंगा मजा भइया! भां, भां, भां.

सियारः तेरी इतनी जुर्रत?

बैलः खामोश रहो गीदड़!
मेरा हुक्म चलेगा,
मेरा राज रहेगा.
पलट के कुछ न पूछो,
जो कहता हूं सुन लो.
बहुत छू लिए पैर,
बहुत छू लिए पैर.
मिलकर हंसते जाओ

मनमर्जी चिल्लाओ,
भइया! भां, भां, भां.

(सब भां-भां करते हैं, सियार मन में षड़यन्त्र रचता है, खरगोश देखता है.)

सियारः ठीक है बच्चू ठहरो
तुम मनमर्जी चिल्लाओ.
सब को ठीक करूंगा
अब मज़ा देखते जाओ.

(सियार भाग जाता है, खरगोश देख लेता है. बैल भां-भां छोड़कर, नया आदेश जारी करता है.)

बैलः कठिनम् नियमम् आदेशम्
मीटम् मच्छिम् करो खतम्.
केवल चर्वण घासम्, घासम्, घासम्.
खरगोश, गिलहरी वगैरहः वाह, वाह, आया मज़ा.
मांसाहारी जानवरः क्या, क्या कहा?

(शोर होता है, इसी दौरान भेस बदल कर सियार आता है, खरगोश उसे देख लेता है.)

बैलः खामोश रहो सब
नहीं तो टक्कर मारके कर दूंगा बेढब.
चोप, चोप, चोप.
सियारः नहीं चाहिए, नहीं चाहिए
सरकार बैल की नहीं चाहिए.
सबः लेकिन यह होगा कैसे.
सियारः मार डालो जान से.
भालूः लेकिन यह तो शिवजी का वाहन है.
सियारः तो क्या?
जंगल में शिवजी ने भारी अकाल देखा,
जंतुओं के खाने को तब यह बैल भेजा.
लेकिन यह बैल बनके बैठ गया राजा.
यह तो है खाजा, रे खाजा, रे खाजा.
खाजा रे खाजा रे, खाजा रे खाजा.

खरगोश: यह सब तूने कैसे जाना?

सियार: मैं शिव का जासूस पुराना.
पकड़ बैल को नीचे लाओ.
रस्सी से इसको बंधवाओ.

खरगोश: जंगल के सब जीव जंतुओं, मेरा एक सवाल,
सियार गायब है, शायद यह उसकी ही हो चाल.

सियार: चाल वाल का चक्कर छोड़ो,
बैल को खींचो नीचे.
वर्ना शिवजी गुस्सा होकर,
पड़ जाएंगे पीछे.

(सब पकड़ के बैल को सिंहासन से खींच कर उतारते हैं, बैल रोता चिल्लाता है.)

भालू: बैल से छूटा पीछा, अब कौन बनेगा राजा?

शेर: कौन से क्या है तेरा मतलब, मैं ही तो हूं राजा.

बाघ: तुम थे राजा इतने दिन, अब मैं जंगल का राजा.

सियार: ऐसे चिल्लाने से तो कोई न बनेगा राजा.

(सब चिल्लाते हैं, मैं हूं राजा, मैं, मैं बनूंगा, नहीं, मैं बनूंगा, धकम-पेल होती है.)

सियार: सुनो भाई सारे
सही तरकीब है
बस पास हमारे.
उठाने को हो राज़ी
जो खाने की ज़िम्मेदारी
जो सभी को पेट भर
और मनपसंद खाना खिलाए.
बस वही जंगल की गद्दी का
सही राजा कहाए.

सब: कौन है ऐसा
जो इसका जिम्मा ले पाए?

सियार: जिम्मा मैं ले सकता हूं
पर दाम लगेंगे पूरे.
कीमत जो पूरी दे पाये

भर-पेट उसे मिल जाए.

सब: पूरे दाम चुकाएंगे.
रोज ढेर सा खाएंगे.

सियार: मिलेगा, मिलेगा. ज़रा ठहरो (खरगोश के पास जाता है, खुसफुसा कर) गाजर खाओगे?

खरगोश: हां हां.

सियार: जाओ खेत से तोड़ कर खाओ. (बैल से)
घास खाओगे?

बैल: हां.

सियार: मैदान में लगी है, जा के खाओ. (बघर्रे और भेड़िये के पास जाता है) खरगोश खाओगे, गिलहरी खाओगे?

दोनो हां, हां.

सियार: (खरगोश और गिलहरी की तरफ इशारा करके)
वह रहे, खा लो. (बाघ के पास जाता है)
हिरन खाओगे?

बाघ: हां, हां.

सियार: वह रहा जा के खा लो (शेर से)
बैल खाओगे?

शेर: हां, हां.

सियार: बांध के रखा है. ज़रूर मिलेगा. (भालू से)
शहद खाओगे?

भालू: हां हां.

सियार: इस पेड़ के नीचे खड़े रहना. (सबसे पूछता है)
हां भई, सब को पता चल गया,
किसका खाना कहां कहां मिलेगा?

सब: हां हां.

सियार: हां हां.

सियार: तो बोलो कौन बनेगा राजा?

सब: आप, आप ही महाराज !

सियार: अब इस जंगल का राजा हूं मैं,
हां जंगल का राजा हूं मैं.
जो भी खाना चाहे पैसा लेके आए

मन मर्ज़ी का खाना पाए,
मन मर्ज़ी का खाना पाए.

(सब पैसे देते हैं, खरगोश नहीं देता, दूर से देखता है.)

सियारः क्यूं बे, तूने नहीं दिए?
खरगोशः तू कौन है?
सियारः (घबरा जाता है)
ठीक है, ठीक है, तुझे आज
मुफ़्त दे देता हूं. पर कल से नहीं चलेगा.
(सब से) जिसका जो खाना है ले लो.

(सब एक दूसरे का पीछा करते हैं, सियार सिंहासन पर बैठ कर पैसे गिनता है.)

खरगोशः ठहर जाओ, सब ठहर जाओ. यह क्या कर रहे हो?
सब एक दूसरे को खाने दौड़ रहे हो? यह इसकी
चाल है. मेरे ख्याल से, यह और कोई नहीं,
यह तो वही हमारा जाना पहचाना
सियार है, वही गीदड़.
सियारः झूठ है, बकवास है, झूठ है, बकवास है.
खरगोशः झूठ नहीं यह एकदम सच है. तू वही गीदड़ है.
हुंआ हुंआ चिल्लाता है और सट्टे का व्योपार करता है.
सियारः सरासर बकवास है. मैं सियार नहीं हूं, नहीं.
खरगोशः ठीक है. परख लेते हैं. मैं तुम्हारी तरह हुंआ-हुंआ की
आवाज़ करूंगा. जंगल के सारे गीदड़ भी साथ आवाज
हुंआ-हुंआ करेंगे. अगर तुम भी हुंआ-हुंआ करने लगे तो
साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि तुम भी गीदड़ हो, सियार हो,
तो तुम्हें गद्दी छोड़नी पड़ेगी.
सियारः खबरदार, यह है राज दरबार
चीखने चिल्लाने की यहां इज़ाजत नहीं.
खरगोशः लेकिन सच्चाई तो जाननी ही होगी
क्यूं भई बोलो, हुंआ-हुंआ करूं मैं?
सबः हां हां.

(खरगोश हुंआ-हुंआ करता है. चारों तरफ़ से आवाज़ आती हैं.)

खरगोश: हुंआ-हुंआ, हुंआ-हुंआ
सट्टा आज कैसा हुआ?

कोरस: बढ़िया हुआ, बढ़िया हुआ.
सब झूठा माल बेच दिया.

(सियार बहुत बेचैन होता है.)

खरगोश: हुंआ-हुंआ हुंआ-हुंआ
अच्छा किया बेच दिया.

कोरस: महंगा माल बेच दिया
सस्ता माल खेंच लिया.

खरगोश: हुंआ-हुंआ हुंआ-हुंआ
दाम ऊंचा कैसे किया.

कोरस: सस्ता माल छुपा लिया,
दाम ऐसे बढ़ा दिया.

खरगोश: हुंआ-हुंआ कैसे किया
दबा माल बेच दिया.

कोरस: बेच दिया, बेच दिया,
नफा खूब खेंच लिया

(सियार भी नाचना शुरू करता है.)

सियार: नफा आज खूब हुआ.
सट्टा आज खूब हुआ.
हुंआ-हुंआ हुंआ-हुंआ
नफा आज खूब हुआ.

(सब सियार को नाचता देखते हैं.)

खरगोश: खुल गया भेद तेरा.
तेरा भेद खुल गया.

(उसको खींच कर उतारते हैं. गीदड़ रोता है. खाली सिंहासन देखकर सब उस पर बैठना चाहते है.)

शेर: खाली है सिंहासन, मैं जा बैठूं इस पर.

खरगोश: बूढ़े हो, कमज़ोर हो, अब छोड़ो ये चक्कर.

बैल: इसका तो मतलब है कि अब राजा मैं ही.

खरगोश: एक बार की मूरखता क्या नहीं है काफ़ी?

बाघ: मैं ही जा बैठूं फिर सिंहासन के ऊपर.

खरगोश: नहीं तुम्हारे बस का यह जिम्मा, तुम कायर.

भालू: इस चक्कर में भूल न जाना भइया मुझको.

खरगोश: दर्द की हालत में देंगे, तकलीफ न तुमको.

सब: तो फिर कौन होगा यहां का राजा?

खरगोश: आखिर हम सब ही तो जीना चाहते हैं न.

सब: बिल्कुल! क्यों नहीं.

खरगोश: तो हम सब मिलकर फैसला करेंगे कि कैसे जियें.

ये दुनिया रंगीन

नारंगी:

नारंगी है रंग अनोखा
चमकदार और चोखा चोखा.
गाजर नारंगी होती है,
कद्दू भी नारंगी.
लैमनचूस का रंग नारंगी,
आईस्क्रीम नारंगी.
आग का शोला भी नारंगी,
सर्दी में गरमाये.
नारंगी है रंग अनोखा,
सबके मन को भाये.

हरा:

घास हरी है, पेड़ हरे हैं,
खेत भी देखो हरे भरे हैं.
हरी सब्ज़ियां, हरे साग हैं,
हरी क्यारी, हरे बाग हैं.
टिड्डे का भी रंग हरा है,
तोते का भी रंग हरा है.
हरा रंग आंखों को भाए,
जो भी देखे खुश हो जाए.

नीला:

आसमान की छतरी नीली,
सागर का जल नीला.
नीलकंठ की गर्दन नीली,
मोर का रंग भी नीला.

नील में धुल कर उजले कपड़े
चमकदार बन जायें.
नीले आसमान में पंछी
नाचें, गाने गायें.

पीला: पीला कितना चमकदार है,
चमके और चमकाये.
जगमग, जगमग जुगनू नाचे,
दीपक रात भगाये.
फुलझड़ियों की पीली बारिश,
सबके मन को भाये.
सूरज पीला, चांद भी पीला,
पीले गगन के तारे.
तितली पीली, फूल भी पीले,
लगते कितने प्यारे.

गुलाबी: बाग का राजा फूल गुलाब,
पहने रंग गुलाबी ताज.
सुबह की चुन्नी रंग गुलाब,
शाम की चादर रंग गुलाब.
वाह गुलाबी राजा रंग,
देख के मन में आये उमंग.

लाल: लाल टिमाटर, चेरी, सेब,
अभी ख़रीदो, खोलो जेब.
गुस्से में सब होते लाल,
और शरम के मारे लाल.
लाल रंग है ताक़तवर,
देख के रूकती हर मोटर.
लाल है सबसे बढ़िया रंग.
लाल न हो तो सब बेरंग.

बैंगनी: चिड़ियों के पंख बैंगनी
और शंख बैंगनी.
कितने ही फूल गिन लो
चमन में, हैं बैंगनी.
जामुन भी बैंगनी है,
तो बैंगन भी बैंगनी.
फिर फ़ालसे की बात क्या
वह है ही बैंगनी,
होली न मन सके,
जो न हो रंग बैंगनी.

(गाते हैं.)

सारे रंग: ये दुनिया रंगीन है प्यारे,
ये दुनिया रंगीन.
चाहे जाओ अमरीका,
या जाकर देखो चीन.
ये दुनिया रंगीन.
आसमान में उड़कर देखो,
चलते-चलते मुड़कर देखो.
घर के अंदर आ कर देखो,
या खेतों में जाकर देखो.
ये दुनिया रंगीन.
चाहे हंसते-हंसते देखो,
या देखो ग़मग़ीन.
ये दुनिया रंगीन.
ऊपर, नीचे, अंदर, बाहर,
सब कुछ बहुत हसीन.
ये दुनिया रंगीन.

कथावाचक 1: लाल, गुलाबी, हरा, बैंगनी, नीला, पीला और
नारंगी, सारे रंग हैं कितने प्यारे.

कथावाचक 2: थोड़ा सफ़ेद मिलादे तो हल्के
हो जायें, काला मिला दो तो गाढ़े हो जायें.
जादूगर की तरह अपनी शक्ल
बदल लेते हैं.

कथावाचक 3: अरे, ये क्या, ये कैसा झगड़ा हो रहा है?

नारंगी: मैं हूं सबसे अच्छा.

हरा: नहीं, मैं सब रंगों से अच्छा.

नीला: मैं सबसे सुंदर हूं.

लाल: नहीं, मैं.

गुलाबी: जा, जा, शक्ल देखी है अपनी.

बैंगनी: कैसा भौंडा रंग है तेरा, जैसे बरसों का बीमार.

पीला: और तू? तू तो बिल्कुल ही बेकार.

कथावाचक 1: मामला गड़बड़ है.
रंगों की आपस में हो गई लड़ाई,
सब करते हैं सिर्फ़ अपनी ही बड़ाई.

कथावाचक 2: रूठ कर, मुंह फुलाये बैठे हैं,
रोब से ऐसे ऐंठे हैं,
कोई नहीं काम करने को तैयार,
दुनिया तो हो जायेगी बेरंगी, बेकार.

कथावाचक 3: अरे, ये कौन चली आती है.
बेरंगे फूलों का गुलदस्ता लाती है.
ओहो! ये तो अपनी फूलवाली है.

कथावाचक 1: और साथ में शहर की सब फूल बेचनेवाली आ रही हैं.

फूलवाली: कहां गये, कहां गये रंग सारे के सारे?
अच्छा, तो यहां छुपे बैठे हो मेरे प्यारे !

फूलवाली 1: तुम्हें सब जगह किया तलाश मैंने.
छान मारे धरती और आकाश मैंने.

फूलवाली 2: देखो, देखो ज़रा मेरे फूलों का हाल.
मुरझाई सूरत, फीके पड़ गये गाल.

फूलवाली 3: कोई डालता नहीं पलट के इनपर नजर.

बरबाद हो जाऊंगी, रहा यही हाल अगर.

कथावाचक 1: क्या? फूल, और बेरंग सोचो जरा.

कथावाचक 2: लेकिन उधर देखो, कोई और चला आता है.

कथावाचक 3: हां, ये तो अपने मुहल्ले का सब्जीवाला है.

कथावाचक 1: और इनके साथ भी शहर के सब सब्जीवाले आ रहे हैं.

सब्जीवाला 1: कहां गया मेरी भिन्डी का हरापन,
कैसे बेरंगे हो गये मेरे बैंगन.

सब्ज़ीवाला 2: सेबों की लाली कहां गई. किसने चुरा लिया इन संतरों का रंग.

सब सब्ज़ीवाले: अच्छा, तो यहां बैठे हो सारे.
ये तुमने क्या किया मेरे प्यारे?

सब्ज़ीवाले 3: मेरी सब्ज़ियों से रूठ गये तुम.
मेरे फलों को भूल गये तुम.

सब्ज़ीवाले 4: ऐसे करोगे तो कैसे चलेगा,
कौन मेरा माल ख़रीदेगा?

कथावाचक 1: मैं तो कभी न खाऊं ऐसी बेरंगी सब्ज़ियां.

कथावाचक 2: और फलों को तो हाथ भी न लगाऊं.

कथावाचक 3: अरे रे रे, भागो, भागो, ये शेर
कहां से चला आया, जंगल छोड़ कर.
हमारे विद्यालय में कैसे घुस आया?

कथावाचक 1: पर समझ गया समझ गया मैं, ये यहां क्यूं आया है
समझ गया मैं!

शेर: कहां हैं वो बेवकूफ, पाजी रंगों के
बच्चे, जिन्होंने ये भौंडा मज़ाक़ किया
है? यहां बैठे हो. शर्म नहीं आती. चल
के देखो क्या हाल किया है तुमने जंगल
का, क्या हाल किया है मेरा.
मेरी सुनहरी अयाल को धो दिया,
मेरी लाल आंखों को सफेद बना दिया.
हिरनों के चिकत्ते,
ज़िबरे की धारियां,
सब चुरा ली तुमने?
क्या तुम नहीं जानते कि रंगों के बग़ैर

कोई जानवर जी नहीं सकता. वापस करो
पेड़ों, पौधों, फूलों के रंग, फ़ौरन.
लौटाओ चिड़ियों की सतरंगी पोशाक,
दोबारा रंग दो जानवरों के बदन.
चलो, जल्दी करो.

कथावाचक 1: सच, मैंने तो कभी ये सोचा भी नहीं था
कि रंग जानवरों के लिए कितने ज़रूरी
होते हैं.

कथावाचक 2: देखा है, टिड्डे कैसे पत्तों
में छुपे बैठते हैं, पता ही नहीं चलता कौन-सा
पत्ता है और कौन-सा टिड्डा.

कथावाचक 3: तितलियां कैसे
फूलों में गुम हो जाती हैं.

कथावाचक 1: लेकिन ये कौन आया? सूरज और
बारिश, दोनों एक साथ?

सूरज: नीले, पीले, लाल गुलाबी

बारिश: हरे, बैंगनी, नारंगी.

दोनों: कहां छुपे हैं, कहां छुपे हैं?
नहीं मिले तो नहीं बनेगा इंद्रधनुष भी.

बारिश: ज़रा सोचो, मैं जी भर कर बरसी.
फिर जब बादल के पीछे से
सूरज निकला
सोचा हमने, मिलकर फिर से आज बनाये
सात रंग का धनुष निराला.
आसमान के कंधे पर दें डाल दुपट्टा
सात रंग का.

सूरज: मैंने अपनी किरनों से बूंदों को छेड़ा.
ऊपर, नीचे, चार तरफ़ से उनको घेरा.
मगर एक भी रंग नहीं उनमें से फूटा.

दोनों: क्यूं? क्यूं? क्यूं?

सूरज: क्यूंकि तुम पाजी बच्चे हो.
यहां छुपे हो.
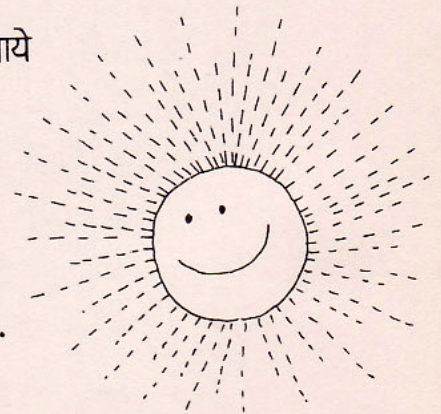
पूरी दुनिया को बेरंगा करने का
क्या हक है तुमको.

कथावाचक 1: इन्द्रधनुष कितना सुन्दर होता है.

कथावाचक 2: क्या हम फिर कभी उसे देख पायेंगे?
ये तो बहुत बुरा होगा.

कथावाचक 3: अब ये कौन आया? एक छोटी सी बच्ची.
और पीछे–पीछे बहुत से बच्चे.
ये क्या कहते है सुनें ज़रा.

बच्चे: (बच्चे एक-एक करके कहते हैं)
पहले जब मैं लाल रंग में
थोड़ा पीला रंग मिलाती
तो नारंगी बन जाता था.
या फिर पीले और नीले को ज़रा मिलाती
पलक झपकते हरा रंग बन जाता था.
ऐसा जादू मुझको कितना अच्छा लगता.
दिन भर बैठी मैं रंगों से खेला करती.
लेकिन अब तस्वीर नहीं कोई भी बनती.
आसमान रंगने को नीला रंग नहीं है,
सूरज में भरने को पीला रंग नहीं है.

सब: रंगों की हड़ताल से सब बेरंग हो गया.
रंगों की हड़ताल से सब बेरंग हो गया.
वापस आओ सारे रंगों वापस आओ.
आओ फिर से दुनिया को रंगीन बनाओ.

कोरस: वापस आओ सारे रंगों वापस आओ.
आओ फिर से दुनिया को रंगीन बनाओ.

लाल: इस बेकार के झगड़े पर मुझको मलाल है.
शर्म के मारे देखो मेरा रंग लाल है.

हरा: इतनी बातें सुनकर तबियत हरी हो गई.
अब न लड़ूंगा, अक्कल मेरी खरी हो गई.

पीला: छोड़ो यार ये झगड़ा फिर से मौज मनायें.
सूरज भैया को फिर से पीला रंगवाये.

नीला: मैं भी फिर से फैलूं पूरे आसमान में.
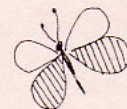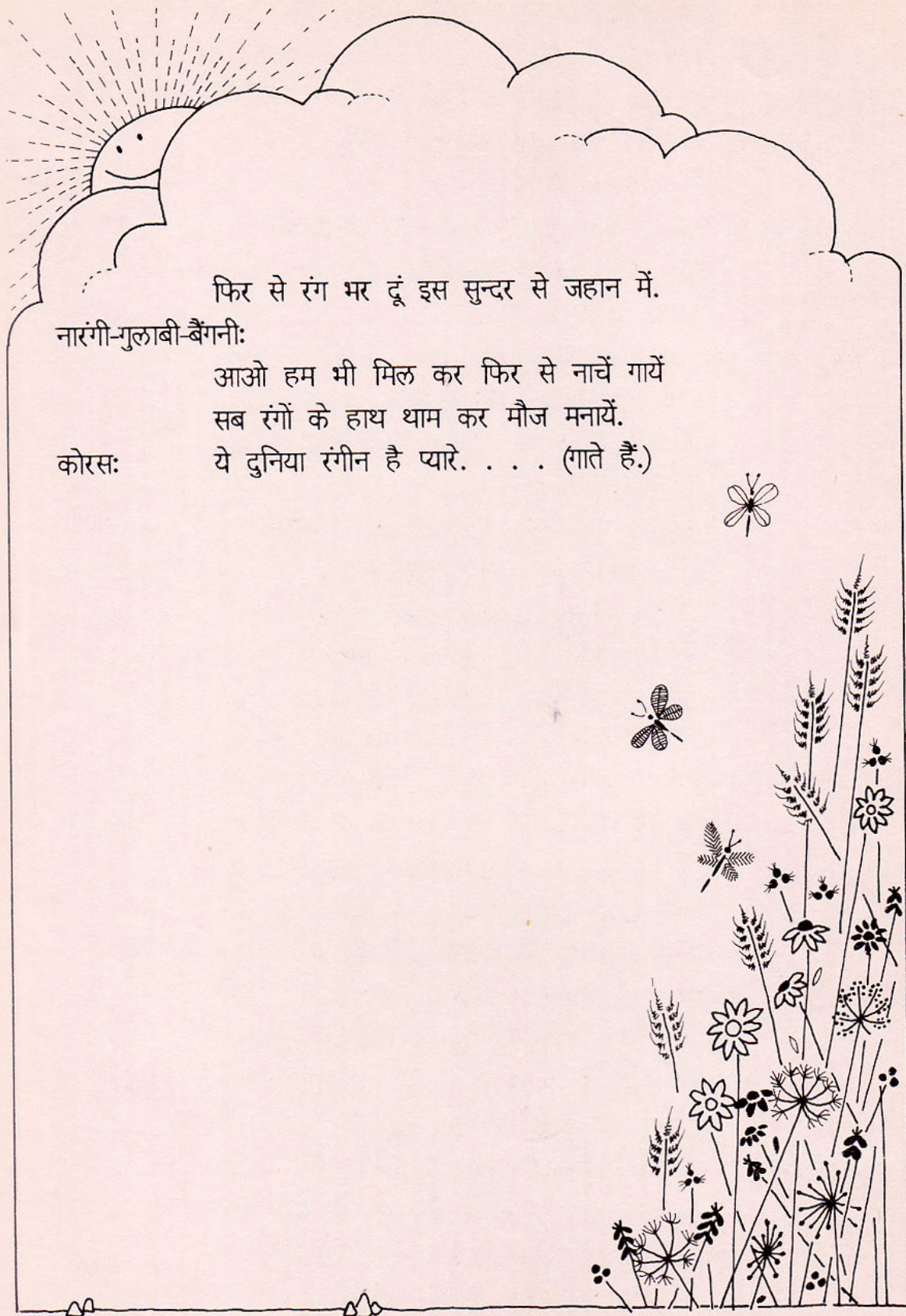
फिर से रंग भर दूं इस सुन्दर से जहान में.

नारंगी-गुलाबी-बैंगनी:

आओ हम भी मिल कर फिर से नाचें गायें
सब रंगों के हाथ थाम कर मौज मनायें.

कोरस: ये दुनिया रंगीन है प्यारे. . . . (गाते हैं.)

मूर्तिकार

(एक अभिनेता दो तरफ़ से खुला लकड़ी का काला डिब्बा लाता है. मंच के बीच में रख कर पीछे हटता है. आगे आकर उस का रुख बदलता है. फिर पीछे हटकर देखता है. सन्तुष्ट होकर जाता है. वैसा ही आसमानी डिब्बा लेकर लौटता है. उसे काले डिब्बे पर रखता है, देखता है, इधर-उधर हिला कर सजाता है. जाता है. सफ़ेद डिब्बा लाकर आसमानी डिब्बे पर रखता है, फिर पीला डिब्बा लाकर रखता है. अपनी कलाकृति से खुश होकर ताली बजाता है. ढोल बजाता है.)

अभिनेताः सबसे नीचे काला डिब्बा,
उसके ऊपर नीला.
उसके ऊपर सादा डिब्बा,
सबसे ऊपर पीला.
इस मूरत के लगते ही बाज़ार पे आई रौनक,
ये उजाड़ सा चौक अचानक बन गया रंग रंगीला.

(एक औरत आती है.)

अभिनेताः नमस्ते जी!
औरतः क्या चाहिए?
अभिनेताः अजी कुछ नहीं चाहिए, आप मेरी कलाकारी देखिए!
औरतः तुम बहुत बदतमीज़ आदमी हो, सड़क चलती औरतों से ऐसे बात करते हैं?

(पलट के जाने लगती है.)

अभिनेताः (उसके पीछे-पीछे चलता है.)
अरे बहन जी, आप मुझे ग़लत समझ रही हैं. मैं तो आपको दिखा रहा था कि चार रंगीन डिब्बों को मैंने कितनी खूबसूरती से सजाया है.

औरतः आपने कुछ फ़रमाया?

अभिनेताः जी हां, जी हां. मैं ये फ़रमा रहा था, मेरा मतलब है कि मैं ये अर्ज़ कर रहा था कि मैंने चार रंगीन डिब्बों से कितनी ख़ूबसूरत मूर्ति बनाई है.

औरतः ओ! ये जो ढेर लगा है आप इसके बारे में कह रहे हैं?

अभिनेताः जी हां, जी हां, लेकिन ये ढेर नहीं, इट इज़ अ स्पैसिफ़िक अरेन्जमैन्ट ऑव फ़ार्म्स एण्ड कलर्स. कितना ख़ूबसूरत है.

औरतः इसमें ख़ूबसूरत क्या है?

अभिनेताः क्या कहा? आपको ये ख़ूबसूरत नहीं लग रहा?

औरतः बिल्कुल नहीं.

अभिनेताः आपका मतलब है कि यू रियली कान्ट सी द ब्यूटी इन दिस लवली पीस ऑव स्कल्प्चर? हाउ स्ट्रेंज, आई मीन रियली!

औरतः जी नहीं, मुझे इसमें कुछ भी सुन्दर नहीं दिख रहा है. बल्कि मुझे तो ये बहुत ही फूहड़, बेढंगा, बेढब और बौड़म लग रहा है.

अभिनेताः क्या, क्या?

औरतः फूहड़, बेढंगा, बेढब और बौड़म! निरी बकवास है ये जो आपने बनाई है. इसका कोई मतलब भी है? न सिर न पैर. बजाये इसके कि अपने किये पर शरम आये, बेशर्मी से इसकी तारीफ़ कर रहा है. आम रास्ते पर ऐसी बदसूरत मूर्ति खड़ी कर देने का कोई तुक भी हो. जो इधर से गुजरेगा उसका मूड ख़राब हो जायेगा. हटाइये इसे यहां से.

अभिनेताः अरे वाह, बड़ी आई हैं ऑर्डर चलाने वाली–"हटाइये यहां से." आपको नहीं पसंद आई तो मत देखिए और अपना रास्ता नापिये. मेरी कलाकृति यहीं रहेगी.

औरतः अच्छा ये तेवर हैं! मैं भी देखती हूं कैसे रहती है ये मूर्ति यहां पे.

(मूर्ति की तरफ़ बढ़ती है. अभिनेता उसके सामने आता है.)

अभिनेताः देखो, देखो मैडम, इसे हाथ मत लगाना, बताये दे रहा हूं, हां!

औरतः इस मूर्ति से तो मैं बाद में निपटूंगी, पहले ज़रा तुझसे सुलट लूं. तू होता कौन है मुझे धमकाने वाला? बड़ा आया है–"हाथ मत लगाना". हट, रास्ते में से हट वरना अच्छा नहीं होगा.

अभिनेताः देखिए बहन जी, मैं शराफ़त से कह रहा हूं, आपको मेरी मूर्ति तोड़ने का कोई अधिकार नहीं है.

औरतः आपको आम रास्ते पर अगर ऐसी उल्टी सीधी चीज़ें खड़ी करने का अधिकार है तो मुझे उन्हें तोड़ के फेंक देने का अधिकार भी है. हटिये सामने से.

अभिनेताः बहन जी, अरे बहन जी, प्लीज. ऐसा मत कीजिए. मेरी बात तो सुनिए. आप जैसी कहेंगी मैं वैसी ही बना दूंगा. रद्दोबदल कर दूंगा, आइ विल मॉडिफ़ाई दि डिजाइन. तोड़िये नहीं, प्लीज!

औरतः आख़री बार कह रही हूं, हट जा रास्ते से नहीं तो मेरा हाथ उठ जायेगा. हटता है या नहीं. . . .

(हाथ उठाती है. अभिनेता डरके भागता है. दूर से देखता है. औरत डिब्बों को दूसरी तरह से सजाती है.)

औरतः अब बनी न कुछ बात, एक शक्ल निकल का आई. अब देखो, सुन्दर लग रहा है या नहीं?
सबसे नीचे सादा डिब्बा,
उसके ऊपर पीला.
उसके ऊपर काला डिब्बा,
सबसे ऊपर नीला.
ऐसी मूरत लगने से इस चौक पे आये रौनक
और फीका सा ये बाज़ार बन आये रंग-रंगीला.

अभिनेताः बस, बस, बस, बस, बस, बस, बस. बंद करो रैंकना. कबाड़ के इसी अंबार को खड़ा करने के लिए तुमने मेरी कलाकृति को तोड़ डाला! ऊपर से तुर्रा ये कि इस कूड़े की तारीफ़ हो रही है!

औरतः क्या कहा "कूड़ा"? हां, कबाड़ी को तो हर जगह कूड़ा ही नज़र आयेगा. तुम्हारी उस बेसरपैर की बकवास से तो लाख-लाख दर्जे बेहतर है.

अभिनेताः ख़ाक बेहतर है. मैंने इससे घटिया मूर्ति आज तक नहीं देखी, हटाओ इसे यहां से.

(मूर्त्ति की तरफ़ बढ़ता है.)

औरतः ख़बरदार!

अभिनेताः तुम्हारे ख़बरदार की ऐसी की तैसी. इस मूर्त्ति को मैं पल भर भी बर्दाशत नहीं कर सकता. इसे तोड़ूंगा, अभी, और फिर से अपनी वाली मूर्त्ति बनाऊंगा.

औरतः अच्छा?

अभिनेताः हां, हां, हां!

औरतः हाथ लगा के देख.

अभिनेताः क्या कर लेगी?

औरतः तो हाथ लगा के तो देख, ख़ुद ही पता चल जायेगा कि क्या कर लूंगी.

अभिनेताः इन गीदड़ भभकियों से डरने वाला नहीं हूं. कहीं समझ रही हो कि धमकाने से रौब में आ जायेगा. बहुत देखे हैं तेरे जैसे.

(अभिनेता फिर मूर्त्ति की तरफ़ बढ़ता है, औरत उसका रास्ता रोकती है. वह दूसरी तरफ से बढ़ता है, औरत फिर उसके सामने आती है. थोड़ी देर यही चलता है.)

अभिनेताः देखो मैडम, अब बहुत हो गया, हट जाओ रास्ते से. तुम जो करना चाहती थीं कर लिया. मेरी मूर्त्ति को तुमने बुरा भला कहा, मैं चुप रहा. फिर तुमने उसे तोड़ डाला, मैंने कुछ नहीं किया. उसकी जगह तुमने ये बकवास बनाई, मैं देखता रहा. इतनी ख़ुराफ़ात करने के बाद तुम्हारा जी भर गया होगा, अब जाओ, घर जाओ और अपना काम करो. शाबाश, चलो.

औरतः धमकी नहीं चली तो नयी चाल सूझी है. मिस्टर, तुम कुछ भी करलो, न तो यहां से मैं जाऊंगी और न ही ये मूर्त्ति हटेगी.

अभिनेताः तू हटती है या नहीं?

औरतः ये रौब किसी और पे झाड़ना.

अभिनेताः तो तू नहीं मानेगी?

औरतः नहीं.

अभिनेताः नहीं मानेगी?

औरतः नहीं.

अभिनेताः तो ये ले.

(उछल कर मूर्त्ति पर लात मारता है. वह टूट कर बिखर जाती है.)

औरतः हाय रे, ज़ालिम ने मेरी मूर्त्ति तोड़ डाली रे. अरे कोई आओ रे नहीं तो ये पागल सब कुछ तोड़ डालेगा, बाज़ार में आग लगा देगा रे. दुकानें लूट लेगा रे. मेरी मूर्त्ति तोड़ डाली जल्लाद ने, हू, हू, हू, हू.

अभिनेताः देखो, देखो तो ज़रा, अब कैसे रो रही है. जब मेरी मूर्त्ति को तोड़ा था तब कुछ नहीं हुआ था! तब तो कहती थी "अधिकार है मुझे तोड़ने का, अधिकार है". और अब ऐसी दहाड़ रही है जैसे मैंने कोई ख़ून कर दिया हो?

औरतः हू, हू, हू, हू, हू, हू, हू, हू, हू. . . .

अभिनेताः रोये जा, मेरी बला से.

औरतः हू, हू, हू–

(डिब्बों को बटोरना शुरू करता है. एक आदमी आता है.)

आदमीः क्या बात है बहन जी, क्या हो गया?

औरत-अभिनेताः

अरे होना क्या था! इसने ज़बरदस्ती मेरी मूर्त्ति तोड़ डाली. इतनी सुन्दर मूर्त्ति बनाई थी मैंने. चार रंग के चार डिब्बों को इतनी खूबसूरती से सजाया था. पूरे चौक पर रौनक आ गई थी. कहने लगा/लगी भद्दी है, भौंडी है. बेकार है, कबाड़ है, बकवास है. तोड़ डाली कम्बख़्त ने. अब आप ही बताइये, ये कहां का इन्साफ़ है? अजी मैं पूछता/पूछती हूं कि सुन्दर शहर को बदसूरत बनाने का इन्हें क्या अधिकार है?

आदमीः (बीच-बीच में बोलता है.)

भई देखिए, अरे सुनिये तो, एक-एक करके ऐसे कैसे चलेगा, पहले उन्हें बोलने दीजिए. मैं कहता हूं. . . . (दहाड़कर) ख़ामोश.

(दोनों चुप होते हैं.)

आदमीः पागल हो गये हो क्या दोनों के दोनों? एक साथ बोलोगे तो क्या ख़ाक समझूंगा! हां जी बहन जी, आप बताइए क्या चक्कर है?

अभिनेताः इससे क्या पूछते हैं भाई साहब? इसी ने तो आकर मेरी मूर्त्ति तोड़ी है.

औरतः और तूने जो मेरी मूर्त्ति तोड़ डाली उसकी नहीं कहता! मक्कार कहीं के, शर्म नहीं आती?

अभिनेता: हे राम, झूठ की भी कोई हद होती है! कुछ तो ख़याल कर. इतना सफ़ेद झूठ भी मत बोल. यहां पहले मूर्त्ति तूने बनाई थी या मैंने? बोल! बोल किसने बनाई थी?

औरत: वो मूर्त्ति थी! चार डिब्बों को उल्टा-सीधा रख दिया उसे कहता है "मूर्त्ति"! बड़ा आया है माइकेल ऐन्जिलो!

अभिनेता: देख लीजिए भाई साहब, सच्चाई आ गई न सामने कि मूर्त्ति पहले मैंने बनाई थी.

औरत: अरे क्या सच्चाई सामने आ गई? वो मूर्त्ति थी ही नहीं.

अभिनेता: मूर्त्ति नहीं थी वो? मूर्त्ति ही नहीं थी? क्या था फिर वह, क्या था? मैं पूछता हूं मूर्त्ति नहीं थी आख़िर वह क्या था?

औरत: कचड़ा था, कचड़ा. कचड़ा माने रबिश. आर. बी. एस. एच रबिश. और ज़ोर से बोलूं.

अभिनेता: देखिए भाई साहब, इसे मना लीजिए वरना आज यहां कोई अनर्थ हो जायेगा.

आदमी: नहीं, नहीं मेरी क्या जरूरत है? खुद ही फैसला कर लो, ऐसे ही प्यार-मुहब्बत से अपने झगड़े को सुलझा लो.

औरत-अभिनेता:

नहीं भाई साहब. इस पागल से बहस करना मेरे बस की बात नहीं है. आप ही फ़ैसला कीजिए.

आदमी: मुझसे फ़ैसला करवाओगे?

दोनों: हां, हां.

आदमी: सोच लो.

दोनों: सोच लिया, सोच लिया.

आदमी: जब मैं कहूंगा तभी बोलोगे.

दोनों: ठीक है.

आदमी: मेरा फ़ैसला फ़ाइनल होगा.

दोनों: येस सर.

आदमी: उसके बाद कोई बहस नहीं होगी.

दोनों: नो सर.

आदमी: हां तो बहन जी. सच-सच बताइए. आप ने इनकी मूर्त्ति तोड़ी?
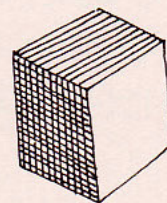
अभिनेता: हां जी, तोड़ी.

आदमी: तुम बीच में मत बोलो? हां जी बहन जी. . . .

औरत: वो मूर्त्ति थी ही नहीं. . . .

आदमी: तोड़ी कि नहीं.

औरत: हां जी, तोड़ी.

अभिनेता: देखा, देखा. . . .

औरत: सर ये फिर बोल रहा है.

अभिनेता: तू कौन होती है.

आदमी: ख़ामोश!

दोनों: येस सर.

आदमी: आप ने इनकी मूर्त्ति क्यूं तोड़ी?

औरत: बहुत भद्दी थी. देखते ही उल्टी आती थी.

आदमी: ठीक है, ठीक है. उसे तोड़कर आपने एक और मूर्त्ति बनाई?

औरत: हां जी.

आदमी: उसे फिर आपने तोड़ा?

अभिनेता: वो मूर्त्ति थी? कूड़े का ढेर. . . .

आदमी: फालतू बकवास मत करो, सीधे-सीधे बताओ—तोड़ी कि नहीं?

अभिनेता: येस सर.

आदमी: ओ.के. ये दो प्वाइन्ट तो साफ़ हुए. तो भाई साहब, आपने जो मूर्त्ति बनाई थी वो फिर से बना के दिखाईए.

अभिनेता: ज़रूर, ज़रूर.

(गुनगुनाते हुए बनाता है.)

अभिनेता: ये देखिए साब. क्या संतुलन है, रंगों का क्या अरेन्जमेन्ट है, कितने डायमैन्शन्ज़ हैं इसमें. कुल मिलाकर कितना प्लीजिंग है.

औरत: आक थू.

आदमी: जो है मुझे भी नज़र आ रहा है. हां तो बहन जी, अब आप दिखाइए, आपने कैसे बनाई थी.

औरत: अभी लीजिए.

(बनाती है.)

औरत: अब आप खुद ही देख लीजिए. वही डिब्बे हैं, वही रंग हैं, वही आकार है, पर कितना फ़र्क है दोनों मूर्त्तियों में. रंगीन डिब्बों को भी

क्रियेटिवली अरेन्ज करने के लिए एक कलाकर वाली नज़र चाहिए होती है. ये नहीं कि जो घसखुदा चाहे मूर्त्तिकार बन जाये.

अभिनेताः घसखुदा! घसखुदा कहती है मुझे! और तू क्या है?

आदमीः ख़ामोश. मैंने दोनों मूत्तियां देख लीं. अब आप मेरा फैसला सुनिए. (अभिनेता से) आपकी मूर्त्ति तो थी ही इस क़ाबिल की तोड़ दी जाये.

औरतः हुर्रे, याह, याह, याह, होय, होय, होय

अभिनेताः क्या, क्या कहा?

आदमीः लेकिन उसे तोड़कर आपने जो मूर्त्ति बनाई है वह उससे भी गई बीती है.

औरतः क्या, क्या, क्या, क्या, क्या, क्या. . . . ?

अभिनेताः (औरत की नकल करता है)
"हुर्रे, हुर्रे", "यख़, यख़, यख़", "हुई, हुई".

औरतः चुप.

आदमीः मेरे रहते दोनों में से कोई मूर्त्ति इस चौक पर नहीं रह सकती. मूर्त्ति कैसे बनाई जाती है, रंगों को खूबसूरती से कैसे अरेन्ज किया जाता है, डिब्बों को कैसे सजाया जाता है—ये आपको मैं दिखाता हूं.

(इस दौरान उसने डिब्बों को उतार दिया है. औरत और अभिनेता लपक कर उसे पकड़ लेते हैं और पीछे खींचते हैं.)

दोनोंः अच्छा, अच्छा, हमें उल्लू बनाता है! झांसा देता है! ढोंगी कहीं के, तू फैसला करेगा?

(उसे घसीटते हुए पीछे ले जाते हैं. वो ज़ोर मार कर आगे आता है. दोनों घिसटते हुये आते हैं. फिर उसे पीछे खींचते हैं.)

आदमीः छोड़ दो मुझे, छोड़ दो. मैं बनाऊंगा मूर्त्ति, मैं बनाऊंगा.

दोनोंः पाजी, मक्कार, दग़ाबाज़, धोखेबाज़.

(इनमें खींचा-तानी चलती है. दूसरी औरत आती है. डिब्बों को देखकर रुकती है.)

औरत 2: अरे वाह. रंगीन डिब्बे. इनसे तो बहुत सुन्दर मूर्त्ति बनाई जा सकती है. बनाऊं? बनाके चौक के बीचों बीच लगा दूंगी. कितना बढ़िया लगेगा.

(मूर्त्ति बनाना शुरू करती है. तीनों उसे देखकर लड़ना बंद करते हैं.)

तीनों: एई, एई औरत! क्या कर रही है.

औरत 2: देखते जाइए. इन चार डिब्बों से मैं एक सुन्दर सी मूर्त्ति बनाऊंगी. चौक की शक्ल ही बदल जायेगी.

तीनों: तेरी मूर्त्ति गई भाड़ में. ये डिब्बे मेरी मूर्त्ति के हैं. मैं बना रहा था/थी.

औरत 2: अरे, अरे.

(चारों एक-एक डिब्बा उठा कर लेते हैं. छीना-झपटी होती है. डिब्बे फेंक कर चारों मार-पीट करने लगते हैं. चार बच्चे आते हैं.)

बच्चा 1: ओय देखो, कैसे सुन्दर डिब्बे हैं.

बच्ची 2: एक सफ़ेद डिब्बा.

बच्चा 3: एक पीला डिब्बा.

बच्चा 1: एक नीला डिब्बा.

चारों: काला डिब्बा, नीला डिब्बा,
सादा डिब्बा, पीला डिब्बा.

बच्ची 1: ऊ-ऊ-ऊ-ऊ

बच्चा 2: छुक-छुक, छुक-छुक

बच्चा 1: टर्र. . . . . .

(चारों रेल बन कर दौड़ते हैं. चारों बालिग मुंह फाड़े उन्हें देखते हैं. रेल उनके पास आकर रुक जाती है.)

चारों: स्टेशन आ गया. स्टेशन आ गया. हो, हो, चाय, चाय गरम ले आलू कचौरी. ठंडा पानी, लैमन सोडा. पान, बीड़ी, सिग्रेट.

बच्ची 1: पटना से आकर दिल्ली जाने वाली बॉम्बे मेल
प्लेटफार्म नंबर चौबीस से जाने वाली है.

चारों: गाड़ी जा रही है, बैठो-बैठो, जल्दी बैठो भई.

बच्ची 1: ऊ-ऊ, ऊ

बच्चा-1: टर्र. . . .

(चारों बालिग़ भी गाड़ी में डिब्बे बन कर लग जाते हैं. गाड़ी धीरे-धीरे चलती है, फिर रफ्तार पकड़ती है.)

आठों: छुक, छुक, छुक, छुक

छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक
काला डिब्बा सबसे आगे
छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक
पीला डिब्बा सबसे पीछे
छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक
छुक, छुक. . . .
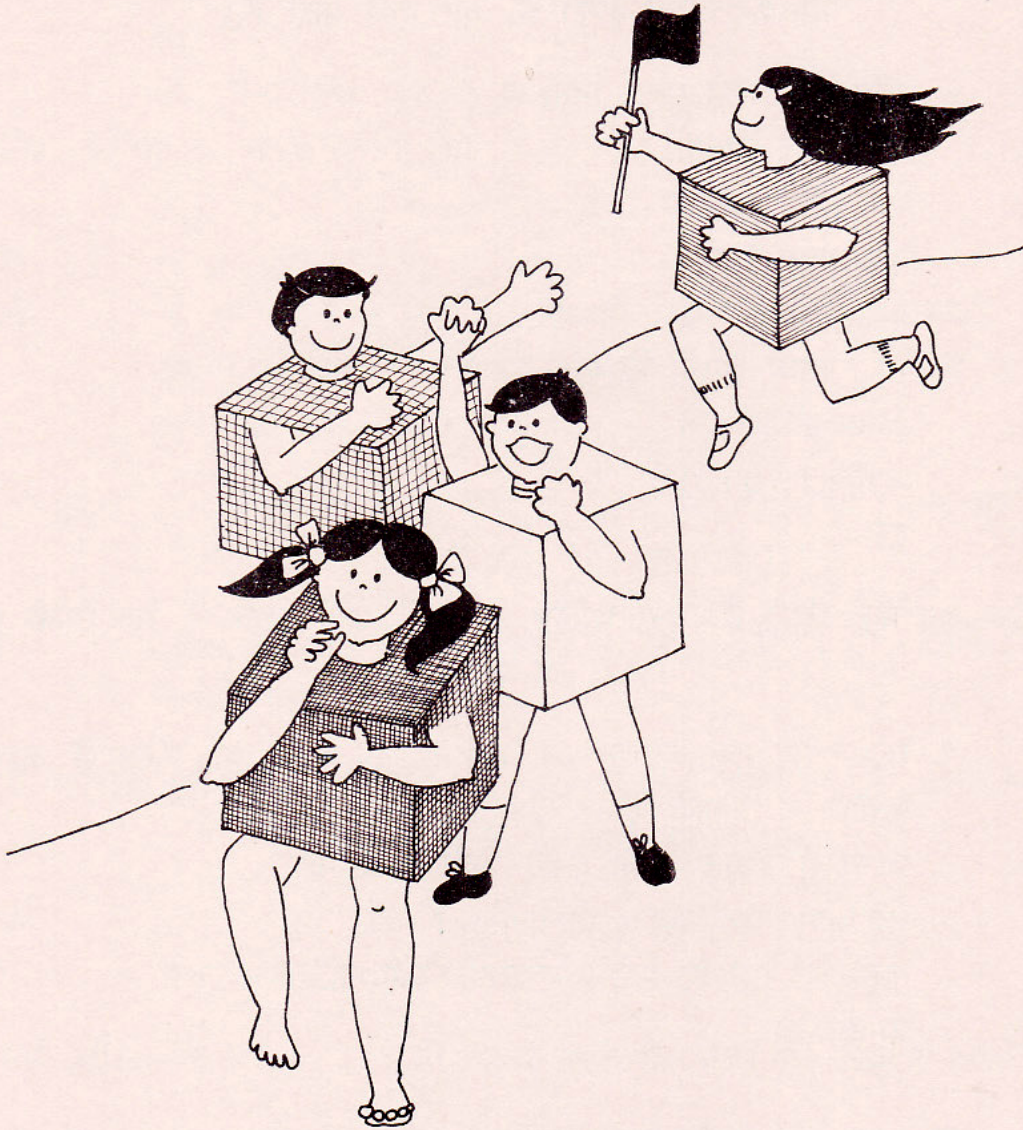
गिरगिट

(ऑन्तन-चेखव के मूल नाटक से रूपांतरित)

(सड़क के किनारे बाज़ार लगा है, लोग इधर से उधर आ जा रहे हैं, कुछ पैदल,
कुछ साइकिल पर, सब्जी वाली, केले वाली, आइस्क्रीमवाला, लॉटरीवाला,
चना-मसालावाला, और पतंग वाला, आवाज़ें लगा रहे हैं.
एक अंधा भिखारी भी घूम रहा है, पुलिसमैन अपने डंडे से टेक लगाये सो रहा है,
चलते-चलते भिखारी की लाठी पुलिसमैन के डण्डे से टकराती है,
डण्डा खिसक जाता है, पुलिसमैन गिर पड़ता है.)

पुलिसमैनः (चिल्लाता है)
बचाओ-बचाओ, पकड़ो-पकड़ो, चोर-चोर, (कपड़े झाड़ता हुआ उठता है, सीटी बजाता है, फेरीवालों से) कहां गया, किधर भागा?

पहलाः कौन?

पुलिसमैनः चोर.

दूसराः कौन चोर?

पुलिसमैनः (मुंह चिढ़ा के)
"कौन चोर?" जिसने मेरी हत्या करने की कोशिश की, हू ट्राइड टु मर्डर मी, और कौन?

तीसराः हत्या! कैसी हत्या?

पुलिसमैनः गधा कहीं का, भरे बाज़ार में, इत्ते लोगों के सामने मुझ पर अटैक हुआ और तू पूछता है, "हत्या, कैसी हत्या."

चौथाः हवलदार साब हमने तो किसी को आपकी हत्या करते देखा नहीं.
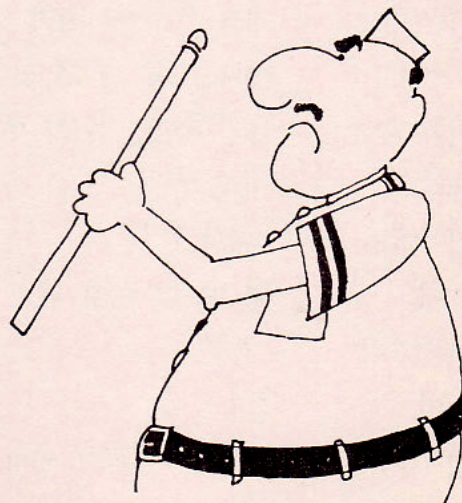
पुलिसमैनः हां, तूं क्यूं देखेगा !
तेरी बला से, चाहे कोई मेरी रोज़ हत्या करे, दिन में दस बार मेरा खून करे, पर तुझे क्या! कमबख़्तों, ये भूल जाते हो कि मेरी ही वजह से इस बाज़ार में इतना अमन चैन है. (उसकी टोकरी से दो केले लेता है) किसी को लूट-पाट का डर नहीं, (चने की पुड़िया लेता है), चोरी-चकारी का डर नहीं (एक टमाटर उठाता है) जिस दिन यहां से चला गया (आइस्क्रीम लेता है), उस दिन पता चलेगा (लॉटरी टिकटों की एक गड्डी लेता है), कि मेरे यहां रहने से तुम लोगों को कितना फ़ायदा है, (पतंग की चरखी लेकर अपनी जेब में ठूंसता है) क्यूं बे अंधे, आई तेरी समझ में.

(भिखारी के कशकोल में से कुछ सिक्के लेता है.)

भिखारीः हां सरकार.

पुलिसमैनः क्या समझ में आई?

भिखारीः कि आप जिस दिन इस बाज़ार से चले गये उस दिन हमें पता चलेगा—

पुलिसमैनः क्या पता चलेगा?

भिखारीः कि हमें कित्ता फ़ायदा है.

पुलिसमैनः हां, शाबाश, क्या? क्या कही, मेरे जाने से फ़ायदा होगा? (भिखारी को बेंत मारता है) फ़ायदा होगा मेरे जाने से, बोल !

भिखारीः हां, हां सरकार.

पुलिसमैनः हां सरकार?

भिखारीः नहीं, नहीं, नहीं सरकार.

पुलिसमैनः बोल "आपके जाने से हमें बहुत नुकसान होगा."

भिखारीः आपके ज ज ज जाने से . . .

पुलिसमैनः सारे बोलो, "आप के"

सातोंः आप के

पुलिसमैनः "जाने से"

सातोंः ज ज ज जाने से

पुलिसमैनः "हमें"

सातोंः हमें

पुलिसमैनः "बहुत नुकसान होगा."

सातोंः बहुत नु नु नु नुकसान होगा.

पुलिसमैन: शाबाश, क्या होगा.

सातों: नुकसान होगा सरकार.

पुलिसमैन: ठीक है, चलो अब अपने अपने काम से लगो, मैं भी अपना काम करूं.

(सब मरे-मरे स्वर में आवाज़ लगाते हैं, पुलिसमैन फिर से जाता है.)

सातों: करे हिफ़ाजत चौबीस घन्टे.
बात-बात पर मारे डन्डे.
खा जाये केले और अन्डे, हाय-हाय-हाय!
ऐसे चौकीदार से भगवान बचाये.
सौदा लेने कोई न आये.
दिन-भर बोनी ना हो पाए.
ऊपर से ये रोब जमाये, हाय, हाय, हाय!
ऐसे चौकीदार से भगवान बचाये.

(गाना गाकर अपनी-अपनी जगह पर लौटते हैं, सर थामे बैठते हैं, ताल जारी रहती है, ताल पर नाचता एक बच्चा आता है, ताल पर थिरकते हुए सब का सामान देखता है, अचानक ताल रुकती है, बच्चा खुशी से चिल्लाता है.)

बच्चा: होय.

(सब हड़बड़ा कर उठते हैं)

बच्चा: होय, कित्ती सारी चीज़ें, पतंग, चरखी, आइस्क्रीम, केले, टमाटर, लॉटरी के टिकिट, चना जोर गरम, होय.

फेरीवाले: आया, आया, आया, आया,
आखिर गाहक आया.
हम सब के सौदे को देखकर
फूला नहीं समाया.
सुबह से हो गई शाम, अभी तक
कुछ भी ना बिक पाया.
कुछ तो ले जा छोटे बाबू
कुछ तो ले जा भाया.
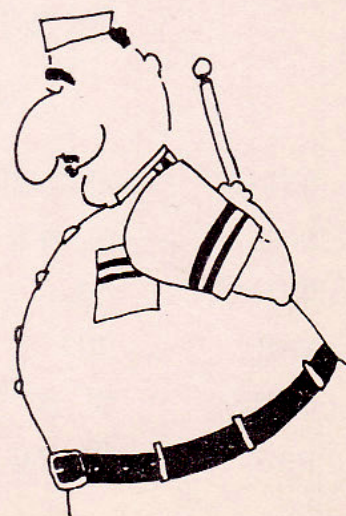
(छहों बच्चे को घेर लेते हैं.)

केलेवाली: ओ प्यारे बच्चे
केले हैं अच्छे.

पतंगवाला: मेरी पतंग निराली है
चरख़ी बढ़िया वाली है.

लॉटरीवाला: लॉटरी का तू टिकट कटा ले
घर बैठे ही लाख कमा ले.

सब्ज़ीवाली: ताकत वाले लाल टमाटर
देख के मुंह में आये वाटर.
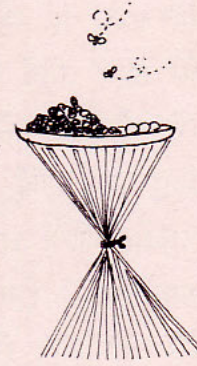
आइस्क्रीम वाला:
आईस्क्रीम है सस्तेवाली
चोकबार और पिस्तेवाली

चनेवाला: मेरे चने को खाले प्यारे
आठ आने में इत्ते सारे.

भिखारी: बाबू, अंधे, गरीब को दो रोटी दे दे, बाबू.

(फेरीवाले भिखारी को भगाते हैं.)

फेरीवाले: हट, हट, परे हट, बाऊजी को परेशान मत कर, आ गया नेस्ती फैलाने.

बच्चा: एक केला दो, आहा हा हा (खाता है), ये टमाटर देना, वाह (खाता है). वो वाली पतंग दो, कित्ती सुन्दर है, कौनसी लॉटरी है तुम्हारे पास, एयर फ़ोर्स बम्पर का एक टिकट दे दो, आठ आने के चने, मसाला पड़ा हुआ है ना? एक ओरेंज बार आइस्क्रीम दे दो.

(आइस्क्रीम चाटता हुआ जाने लगता है.)

फेरीवाले: बाऊ जी!

बच्चा: हां, क्या बात है?

फेरीवाले: पैसे.

बच्चा: पैसे?

फेरीवाले: हां, हां पैसे?

बच्चा: मेरे पास तो पैसे हैं ही नहीं.

फेरीवाले: पैसे नहीं हैं?

बच्चा: हां, देखो.

(जेबें उलटके दिखाता है.)

फेरीवाले: अबे, पैसे नहीं थे तो इत्ता माल क्यूं लिया?

बच्चा: भूख लगी थी इसलिए.

फेरीवाले: "भूख लगी थी इसलिए." इसकी हिम्मत तो देखो, निकाल, पैसे निकाल.

बच्चा: मैंने कहा ना, नहीं हैं मेरे पास.

पतंगवाला: तो मेरी पतंग तो वापस कर

बच्चा: (बिसूरता है)

ऐं

लॉटरीवाला: टिकट वापस कर लॉटरी का.

बच्चा: ऐं!

पतंगवाला-लॉटरीवाला:

एई, क्या करता है बे, वापस कर.

(अपना माल वापस छीन लेते हैं, बच्चा रोता हुआ जाने लगता है)

बाकी चारों: एई, एई जाता कहां है, इधर आ.

(बच्चा रुककर और जोर से रोता है)

चारों: रोने से काम नहीं चलेगा, पैसे निकाल.

(बच्चा खामोश.)

एक: ऐसे नहीं मानेगा ये.

दो: कान खींचने पड़ेंगे.

तीन: दो चार हाथ लगाने पड़ेंगे.

चार: थाने ले चलो ससुरे को.

चारों: थाने! वो पुलिसवाला कहां गया? वो रहा.

(सभी फेरीवाले उसके पास जाते हैं.)

एक: कैसे घोड़े बेचके सो रहा है.

दो: जब कोई नहीं होता तब तो 'चोर-चोर' चिल्लाता है.
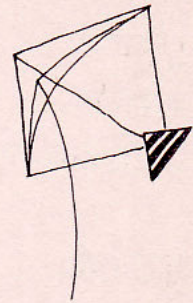
तीनः अब खुलेआम डाका पड़ रहा है तो सो रहा है.

चारः हवलदार साब! अरे ओ हवलदार साब.

पांचः जागो पहरेदार साब, हम लुट गये.

छः ऐसे नहीं उठेगा, ठहरो,

(लात मारकर उसका डंडा गिरा देता है, पुलिसमैन गिर पड़ता है.)

पुलिसमैनः चोर-चोर, पकड़ो-पकड़ो, खून, हत्या, मर्डर, जाने न पाये, जाने न पाये.

(सीटी बजाता है, छहों फेरीवालों को देखकर धीरे-धीरे खड़ा होता है.)
पुलिसमैन डंडा उठाकर बच्चे की तरफ बढता है, वो दहाड़ कर रोता है.)

पुलिसमैनः क्या चुराया है इसने?

चनेवालाः मेरे चने खा गया.

आइस्क्रीमवालाः
मेरी आइस्क्रीम चाट गया.

केलेवालीः मेरे केले हड़प गया.

सब्जीवालीः मेरे टमाटर थूर गया.

चारोंः अब पैसे नहीं देता.

पुलिसमैनः चने खा गया? क्यूं बे!

चारोंः हां.

(बच्चा रोता है.)

पुलिसमैनः आइस्क्रीम खा गया? क्यूं बे?

चारोंः हां हां.

पुलिसमैनः केले खा गया? क्यूं बे!

चारोंः हां, हां, हां.

(बच्चा रोता है.)

पुलिसमैनः टमाटर खा गया? क्यूं बे!

चारोंः हां, हां, हां, हां.

(बच्चा रोता है.)

पुलिसमैनः और पैसे नहीं देता? क्यूं बे.
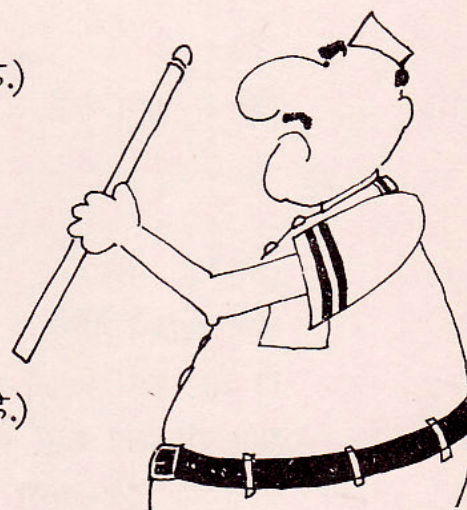
चारों: हां, अब पैसे नहीं देता.

पुलिसमैन: चने खा जायेगा? आइस्क्रीम खा जायेगा, टमाटर खा जायेगा, और पैसे नहीं देगा? अपने को थानेदार समझता है क्या?

(इसी दौरान भीड़ जुटने लगती है.)

पुलिसमैन: क्यूं बे क्या नाम है तेरा?

(बच्चा ख़ामोश.)

पुलिसमैन: बाप का क्या नाम है?

(बच्चा ख़ामोश.)

पुलिसमैन: रहता कहां है?

(बच्चा खामोश.)

फेरीवाले: होगा कोई आवारा.

लुच्चा और नाकारा.
फिरता है मारामारा.
ये है चोर की औलाद,
गलियों का है पाला.
मुफ्त की खाने वाला,
आफ़त का परकाला.
ये है चोर की औलाद.

पुलिसमैन: शक्ल भी एकदम चोरों वाली है, (बेंत मारता है.) कपड़े-लत्तों से भी लफंगा लगता है, (एक बेंत और मारता है.) तौर-तरीके भी खानदानी डकैतोंवाले हैं, (फिर मारता है.) हाव भाव भी बदमाशों जैसे हैं, (फिर मारता है.) हवालात के अन्दर कर दूं?
मार-मार के बंदर कर दूं?
शलजम और चुकंदर कर दूं?
(बच्चा रोता है.) अबे चुप.

फेरीवाले: चुप.

पुलिसमैन: बड़ा आया है टिसुए बहाने वाला.

फेरीवाला: बड़ा आया है टिसुए बहाने वाला.

पुलिसमैन: ना तुझसे जेल में चक्की पिसवाई तो.

एक आदमी: ठहरो, ठहरो, ठहरो, ये तो शायद कमिश्नर साब का बेटा है.

फेरीवाले: क्या?

पुलिसमैन: क क क क क्या?

दूसरा आदमी: हां, हां, मैंने इसे कमिश्नर साब के बंगले में खेलते देखा है.

पुलिसमैन: कमिश्नर साब के–बंगले में–खेलते–देखा है, जभी तो मैं कहूं कि इतना छोटा-सा, प्यारा-सा, सुन्दर-सा, तगड़ा-सा, मासूम-सा भोला-भाला-सा बच्चा ऐसी हरकतें कैसे कर सकता है, फिर देखने में भी अच्छे, शरीफ़ और रईस घराने का लगता है, कपड़े भी महंगे वाले पहने हैं, बेचारा बच्चा, कितना डर गया है, अले ले ले ले ले ले, गुलु-गुलु-गुलु-गुलु. कोई बात नहीं, कोई बात नहीं बेटे, अब मैं आ गया हूं, अब आपको कोई परेशान नहीं करेगा. बछ-बछ, चुप हो जाइए, अे लो, बछ आंछू पोंछ दो. शाब्बास. इन्होंने आपको सताया है? मैं इनकी खबर लेता हूं. (फेरी वालों से) क्यूं बे, तुम्हे शरम नहीं आती? इस नन्हीं-सी जान को, इस बेसहारा बच्चे को अकेला समझ के लूटते हो?

फेरीवाले: नहीं सरकार.

पुलिसमैन: अन्धेरगर्दी मचा रखी है?

फेरीवाले: नहीं सरकार.

पुलिसमैन: ख़ामोश! 'नहीं सरकार' के बच्चे, तुम्हारा ख़्याल है कि तुम्हारी बदमाशियों पर नज़र रखने वाला कोई नहीं है? जो तुम्हारी मर्जी होगी वो तुम करोगे? लेकिन कान खोलके सुन लो, जब तक मैं हूं कोई नाइन्साफ़ी नहीं होने दूंगा, किसी मासूम पर अत्याचार नहीं होने दूंगा.

फेरीवाले: सरकार, माफ़ कर दो, अनजाने में भूल हो गई.

पुलिसमैन: बको मत. पहले तो जी भर कर बेचारे बच्चे को लूटा, अब रंगे हाथ पकड़े गये तो कहते हो 'भूल हो गई', अपने को थानेदार समझते हो?

तीसरा आदमी: हवलदार साब, इन भाई साब से गलती हुई है, ये लड़का कमिश्नर साब का नहीं हो सकता.

पुलिसमैन: क्या?

तीसरा आदमी: हां.

पुलिसमैन: क्यूं नहीं हो सकता?

दूसरा आदमी: भई कमिश्नर साब के पास तीन-तीन गाड़ियां हैं, ड्राइवर हैं, उनके बच्चे को बाज़ार घूमने जाना होगा तो नौकर के साथ गाड़ी में जायेगा.

पुलिसमैन: पर इन्होंने इसे कमिश्नर साब के बंगले में खेलते देखा है.

दूसरा आदमी: उससे क्या होता है कमिश्नर साब के जमादार का बच्चा भी तो हो सकता है, धोबी का, ख़ानसामा का, चौकीदार का, माली का, किसी का भी हो सकता है.

पुलिसमैन: और कमिश्नर साब का भी तो हो सकता है?

दूसरा आदमी: ना, कमिश्नर साब का बेटा ऐसे अकेला घूमने आ ही नहीं सकता.

भीड़: सही बात है जी, भला कमिश्नर साब का बेटा ऐसे आवारा क्यूं घूमेगा, वो तो कार में घूमेगा, फेरीवालों का सामान क्यों खायेगा, बड़े-बड़े होटलों में खायेगा और घर में माल की कोई कमी होगी, ज़रूर ये किसी नौकर-चाकर का बच्चा होगा, चपरासी का होगा जी, या अर्दली का.

पुलिसमैन: देखो जी क्या ज़माना आ गया है. ज़रा-ज़रा से बच्चे भी ठगी सीख गये हैं. (बच्चे को बेंत मारता है.) क्यूं बे? इत्ती देर से सुन रहा है, फिर भी मुँह से नहीं फूटा कि तू कमिश्नर साब का नहीं है किसी धोबी-वोबी का है. (फिर मारता है.) कैसा बहरूपिया है. बड़ा होकर पक्का ठग बनेगा.

फेरीवाले: हम कहते थे ना कि कोई आवारा होगा.

पुलिसमैन: अरे तुम क्या कहते थे? मुझे तो शुरू से ही मालूम था. वो तो इस बेवकूफ़ के कहने से मैं थोड़ सा क्नफ्यूज़ हो गया.

फेरीवाले: हवलदार साब, अब इससे हमारे पैसे निकलवाओ.

पुलिसमैन: पैसे तो इससे हवालात में निकलवाऊंगा (मारता है.) इसके बाप को भी न बन्द करवाया तो मेरा नाम नहीं (मारता है.) चुप-चुप आवाज़ भी निकाली तो ज़बान खेंच लूंगा. (बच्चा और ज़ोर से रोने लगता है.) अच्छा-अच्छा, नहीं मानेगा. एक तो लूटमार करेगा फिर पकड़े जाने पर रोयेगा, मैं तेरी हड्डी-पसली एक कर दूंगा.

(बच्चे को मारता है. रोशनी मध्यम् होती है. दूसरी तरफ़ तेज़ रोशनी होती है. दो आदमी आते हैं.)

कमिश्नर: पी.ए.

पी.ए.: हां कमिश्नर साब.

कमिश्नरः जैसे भी हो, मेरे बेटे को फ़ौरन तलाश करो. सारी पुलिसफ़ोर्स लगा दो. टी.वी. और रेडियो पर अनाउन्समैन्ट करवाओ, शहर की हर दीवार पर पोस्टर लगवाओ, लाउडस्पीकरों से ऐलान करवाओ. राज्य के बोर्डर सील करवा दो, कोना-कोना छान मारो, लेकिन आज रात से पहले मेरा बेटा तलाश करके मुझे ला दो.

पी.ए.: जो हुकुम सरकार.

कमिश्नरः न जाने कहाँ भटक रहा होगा बेचारा. भूखा-प्यासा, थका-हारा. कितना मासूम है बेचारा. इतना शर्मीला है, प्यास लगेगी तो किसी से पानी भी नहीं मांगेगा. भूख से तड़पता रहेगा पर मुँह से नहीं कहेगा. उसकी मां बेचारी उसे पूछ-पूछकर खिलाती है, अपने मुँह से कभी नहीं कहता. बेचारा बच्चा.

पी.ए.: बेचारा !

कमिश्नरः हाय !

पी.ए.: हाय !

कमिश्नरः तुम अभी तक यहीं खड़े हो? जो मैंने कहा फ़ौरन करो.

पी.ए.: जो हुकुम कमिश्नर साहब.

(बच्चे के रोने, पुलिसमैन के चिल्लाने और भीड़ की आवाज़ ऊँची होती है.)

पी.ए.: सरकार, एक पुलिस कॉन्स्टेबल किसी बच्चे को पीट रहा है.

कमिश्नरः बच्चे को?

पी.ए.: हाँ सरकार.

कमिश्नरः किस बच्चे को?

पी.ए.: सर, उसकी शक्ल तो दिखी नहीं.

(कमिश्नर, और उसके पीछे पी.ए. भीड़ के पास पहुँचते हैं.)

कमिश्नरः क्या हो रहा है?

(पुलिस वाला बच्चे को पीछे धकेलकर आगे आता है. सैल्यूट मारता है.)

पुलिसमैनः सरकार कुछ नहीं, एक चोर की औलाद, गली का लफंगा इन फेरीवालों को लूट रहा था, मैं जरा उसको समझा रहा था कि ऐसे नहीं करना चाहिए.

कमिश्नरः बच्चा कहां है, लेकर आओ.

पुलिसमैन: इधर आ बे चोर की औलाद.

(फेरीवाले बच्चे को धक्का देकर आगे करते हैं, बच्चा कमिश्नर को देखकर और जोर से रोता है और भाग कर उससे लिपट जाता है.)

कमिश्नर: मेरे लाडले, मेरे प्यारे, मेरी आंखों के तारे.

(सारे फेरीवाले और बाकी लोग भागते हैं, सिर्फ पुलिसमैन, बच्चा, कमिश्नर और पी.ए. वहां रह जाते हैं.)

कमिश्नर: तूने मेरे बच्चे को मारा?
पुलिसमैन: न न न नहीं सरकार, माने, हां सरकार, माने, नहीं सरकार.
कमिश्नर: इसे चोर की औलाद कहा?
पुलिसमैन: नहीं सरकार, माने हां सरकार, माने गलती हो गई सरकार.
कमिश्नर: गधे कहीं के.
पुलिसमैन: यैस सर!
कमिश्नर: बेवकूफ
पुलिसमैन: यैस सर.
कमिश्नर: पी.ए.
पी.ए.:   यैस सर.
कमिश्नर: इस कॉन्स्टेबल को फ़ौरन, अभी, इसी वक्त बर्ख़ास्त किया जाता है.
पी.ए.:   यैस सर.
कमिश्नर: आर्डर निकालो, अभी, फ़ौरन.
पी.ए.:   यैस सर.
कमिश्नर: (बच्चे से) मेरे प्यारे, मेरी आंख के तारे, मेरे लाडले.

(बच्चे को लेकर जाता है.)

पी.ए.: (फ़ाइल में कुछ लिखकर पुलिसमैन को एक कागज देता है.)
यू आर डिसमिस्ड.

(पी.ए. जाता है. पुलिसमैन भी जाता है, धीरे-धीरे फेरीवाले आते हैं, फिर बाज़ार लगता है, पर्दा गिरता है.)

गोपी गवैया—बाघा बजैया

(सत्यजीत राय की फिल्म गूपी गाईन बाघा बांईन"से रूपांतरित)

(कुछ बच्चे कानों पर हाथ रखे भागते हुए आते हैं. उनसे एक कदम पीछे एक और बच्चा (गोपी) आता है. बच्चे इधर-उधर भागते हैं. गोपी उनका पीछा करता है.)

गोपी: सुन लो, सुन लो, मेरा गाना.
बच्चे: नहीं सुनेंगे, तेरा गाना.
गोपी: सुन लो, सुन लो, मेरा गाना.
बच्चे: नहीं सुनेंगे, तेरा गाना.
गोपी: मेहनत करके सीखा मैंने
अच्छा गाना, प्यारा गाना.
बच्चे: नहीं सुनेंगे तेरा गाना
उल्टा, सीधा, भौंडा गाना.

(इस दौरान चार बूढ़े आकर देखते हैं. बच्चे भाग जाते हैं. गोपी बैठ कर रोता है.)

गोपी: मैंने इतनी मुश्किल से गाना सीखा कोई सुनता ही नहीं, सब कहते हैं गोपी को गाना नहीं आता, गधे की तरह रैंकता है.
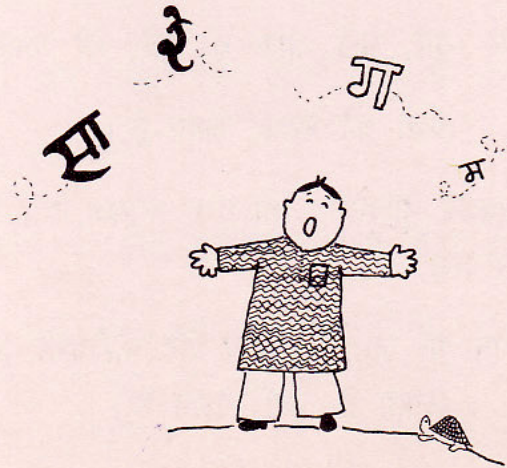
बूढ़ा 1: गोपी, अरे ओ रे गोपी, रो मत बेटे.

बूढ़ा 2: हम सुनेंगे. तू हमें सुना अपना गाना.

गोपी: आप सुनेंगे?

चारों बूढ़े: हां, हां, हम सुनेंगे.

गोपी: मेरा मज़ाक तो नहीं उड़ायेंगे?

चारों बूढ़े: नहीं, नहीं, कभी नहीं.

गोपी: मुझे गधा तो नहीं कहेंगे?

बूढ़े: नहीं, नहीं, कभी नहीं.

गोपी: (गला साफ़ करता है. दहाड़ कर गाता है.)

गाना गाता हूं मैं,
सबको सुनाता हूं मैं,
कोई सुने न सुने,
फिर भी गाता हूं मैं.

बूढ़े: (गिर पड़ते हैं.)

बस, बस, बस, गोपी बस कर.

गोपी: क्यूं, आप को मेरा गाना अच्छा नहीं लगा?

बूढ़ा 1: नहीं, नहीं, अच्छा लगा.

सब: बहुत अच्छा लगा.

बूढ़ा 2: कितनी मीठी आवाज़ है!

सब: कोयल जैसी.

बूढ़ा 3: कितनी सुन्दर धुन है!

सब: आ हा हा हा!

गोपी: सच्ची?

सब: सच्ची!

गोपी: फिर सुनाऊं?

सब: न न न न न.

बूढ़ा 1: गोपी हमें क्यूं सुनाता है?

बूढ़ा 2: राजाजी को सुना.

बूढ़ा 3: राजाजी को गानों का बड़ा शौक़ है.

बूढ़ा 4: तेरा गाना सुन कर खुश हो जायेंगे.

सब: राजाजी तुझे इनाम देंगे.

गोपी: सच्ची?

सबः सच्ची.

गोपीः तो मैं अभी राजाजी के महल पे जाता हूं.

बूढ़ा 4: नहीं, नहीं, अभी नहीं.

बूढ़ा 3: कल सवेरे जाइयो.

बूढ़ा 2: सूरज निकलने से पहले.

बूढ़ा 1: अपनी सुन्दर आवाज़ से राजाजी को जगाइयो.

गोपीः ठीक है यही करूंगा.

सबः शाबाश.

(गोपी कलाबाज़ी लगा कर जाता है.)

बूढ़ा 1: राजा इसको वह मज़ा चखायेगा कि गाना ही भूल जायेगा.

सबः हा हा हा हा!

(बूढ़े जाते हैं. अन्धेरा. रोशनी आते ही राजाजी सोते दिखाई देते हैं. दो पहरेदार खड़े खड़े सो रहे हैं. गोपी आता है.)

गोपीः यहां से राजा का बैडरूम नज़र आ रहा है. यहां बैठ जाता हूं. सुबह होते ही गाना शुरू कर दूंगा.

(मुर्ग़ा बोलता है.)

मुर्ग़ा बोल रहा है. सुबह हो गई.

(खड़ा होकर गाता है. पहरेदार हड़बड़ा कर गिर जाते हैं. राजा उछल कर जागता है.)

राजाः पहरेदार!

दोनोंः हां सरकार.

राजाः किसने शोर मचा रखा है?

दोनोंः पता नहीं सरकार.

राजाः पकड़कर लाओ. सारी नींद ख़राब कर डाली.

(पहरेदार गोपी के पास जाते हैं.)

दोनोंः राजाजी ने बुलाया है.

गोपीः मुझे? सच्ची?

दोनों: हां, हां तुझे. चल.

(गोपी को धक्का देकर ले जाते हैं.)

राजा: क्या नाम है तेरा?

गोपी: गोपी. गोपी गवैया.

राजा: सुबह-सुबह क्या शोर मचा रहा है?

गोपी: शोर? नहीं तो सरकार.

राजा: तो फिर क्या कर रहा था?

गोपी: सरकार मैं तो गाना गा रहा था.

राजा: गा रहा था ! इसे गाना कहते हैं? पहरेदार!

दोनों: हां सरकार.

राजा: इस आदमी की आवाज़ कैसी है?

दोनों: गधे जैसी है.

राजा: तो इसको क्या सज़ा दें?

दोनों: इसे गधे पर बैठा के शहर के बाहर निकाल दिया जाये.

(पहरेदार गधा लाते हैं. गोपी को उस पर बिठा देते हैं. गधे को मारते हैं. राजा-पहरेदार जाते हैं.)

गोपी: गाली सुनाकर,
गधे पर बिठाकर,
निकाल दिया रे.
निकाल दिया रे.

(गधे से उतरता है.)

गोपी: गधे भइया, राजाजी ने तो मेरा गाना सुना नहीं, तुम्हें सुनाऊं?

(गोपी गाता है, गधा भाग जाता है, गोपी सर पकड़ कर बैठता है. बहुत सारे पेड़ आते हैं.)

गोपी: हाय रे मैं तो जंगल में पहुंच गया. अब क्या होगा. कोई जानवर मुझे खा गया तो?

(उधर से बाघा बजैया आता है. दोनों टकरा जाते हैं. चीख कर एक दूसरे से चिपटते हैं. फिर भागते हैं. फिर आमने सामने खड़े हो कर नक़ल करते हैं.)

गोपी: तू कौन है?

बाघा: बाघा, बाघा बजैया, और तू?

गोपी: मैं गोपी, गोपी गवैया. तू यहां क्या कर रहा है?

बाघा: मुझे ढोल बजाने का शौक़ है, पर ठीक से बजता ही नहीं. मेरे देश के राजा ने मुझसे नाराज़ होकर मुझे गधे पर बिठाकर यहां भेज दिया.

गोपी: मेरे देश के राजा ने भी मेरे गाने से नाराज होकर, गधे पर बिठाकर यहां भेज दिया.

बाघा: अब तू क्या करेगा?

गोपी: मालूम नहीं. मुझे तो डर लग रहा है.

बाघा: मुझे भी.

गोपी: यहां तो जानवर होंगे.

बाघा: शेर, भेड़िये, चीते, भालू.

(गोपी रोता है, बाघा भी रोता है, शेर आता है. दोनों डरते हैं. शेर दहाड़कर पास आता है. बाघा ढोल पर हाथ मारता है. शेर रुक जाता. बाघा ढोल बजाता है. गोपी गाना गाता है. शेर "बचाओ बचाओ" चिल्लाकर भागता है.)

दोनों: भाग गया रे, भाग गया रे.
शेर डर कर, भाग गया रे.

बाघा: भूख लग रही है.

गोपी: मुझे भी.

बाघा: मुझे तो बहुत ज़ोर की लग रही है.

गोपी: मुझे और भी ज़ोर की लग रही है.

बाघा: (अंगड़ाई लेकर)
मुझे तो नींद भी आ रही है.

गोपी: मुझे भी.

(दोनों लेट कर सोते हैं. पेड़ नाचते हैं. भूत राजा आता है. गोपी-बाघा उठकर देखते हैं.)

गोपी: बाघा!

बाघा: गोपी?

दोनों: भू भू भू भूत!

भूत राजा: गोपी बाघा, गोपी बाघा
आ जा, मेरे पास आजा
अच्छे गोपी, प्यारे बाघा
आजा मेरे पास आजा.

बाघा: भूत महाराज आप हमारे नाम जानते हैं?

भूत: नाम जानूं, काम जानूं.
शहर मोहल्ला गाम जानूं.
राजा ने तुमको भगवाया.
जंगल के अंदर फिंकवाया.
कहां जाओगे क्या खाओगे,
इस चिन्ता ने तुम्हें सताया.

गोपी: सच्ची, भूत महाराज हम बहुत परेशान हैं.

भूत: मत घबराओ गोपी बाघा
मैं हूं सब भूतों का राजा.
मैं देता तुमको वरदान.
पूरे होंगे सब अरमान.

दोनों: वरदान! ही ही ही ही, हू हू हू.

भूत: जल्दी मांगो, जल्दी मांगो.
वक्त नहीं है, जल्दी मांगो.

गोपी: महाराज, हमारे खाने पीने का कोई इन्तजाम कर दीजिए.

भूत: खाना पीना सब पाओगे,
जल्दी तगड़े हो जाओगे
अपने दायें हाथ मिलाकर,
खूब ज़ोर से मारो ताली.
बीस क़िस्म का खाना फ़ौरन,
आ जायेगा भर-भर थाली.

बाघा: महाराज हमें दुनिया देखने का बड़ा शौक है.

भूत: देखो, देखो दुनिया देखो.
घूमके सारी दुनिया देखो.
पहन के, यह जादू के जूते,

शौक़ से सारी दुनिया देखो.

गोपी: महाराज, अगर हम अच्छी तरह गा बजा कर लोगों को खुश कर सकें तो. . .

भूत: वह भी होगा, वह भी होगा,
सुन्दर-सुन्दर गाना होगा.
तबला ढोल बजाओगे तुम,
सब का मन बहलाओगे तुम.

(भूत जाता है.)

गोपी: बाघा, मैं गा कर देखूं.

बाघा: देख.

गोपी: (गाता है) देखो रे, देखो रे, आओ देखो
प्यारा ये संसार.
फूलों पे कैसी आई बहार
हो बहार, हो बहार.

(बाघा ढोल बजाता है.)

गोपी: भूतों के राजा ने दिये,
भूतों के राजा ने दिये,
हमको तीन वरदान.
क्या बढ़िया वरदान.

बाघा: एक, दो, तीन

गोपी: जो मर्ज़ी हम खा सकते हैं.

बाघा: एक नम्बर, एक नम्बर.

गोपी: जहां भी चाहें जा सकते हैं

बाघा: दो नम्बर, दो नम्बर.

गोपी: सा नी ध प म ग रे सा गा सकते हैं.

बाघा: तीन नम्बर, तीन नम्बर.

गोपी: क्या बढ़िया वरदान,
भूतों के राजा के वरदान.

बाघा: गोपी!

गोपी: बाघा!

सा!
रे!
ग!
म!!
प?
ध???
नी!!

(दोनों नाचते हैं.)

बाघा: चल कहीं चलते हैं.

गोपी: हां चल, पर कहां?

बाघा: ऐसा करते हैं कि ये जूते जहां हमें ले जायें वहीं चलते हैं.

गोपी: ठीक है.

(दोनों जूते पहनते हैं.)

दोनों: ऐ जादू के जूतो उड़ाके हमको ले जाओ तुम वहां,
गाना बजाना पसन्द करते हों लोग जहां.

(दोनों गोल गोल घूमते हैं, पेड़ जाते हैं.)

गोपी: आ हा कितना सुन्दर देश है.

बाघा: हरे, हरे खेत, ऊंचे, ऊंचे पहाड़, नीला आसमान, चिड़ियां, हा हा हा.

गोपी: पर कितनी ख़ामोशी है यहां.

बाघा: कोई आवाज़ नहीं आती.

गोपी: वह देखो एक बच्चा आ रहा है.

(एक बच्चा आता है.)

बाघा: ए भइया, यहां आओ.

(बच्चा उनकी तरफ देखता भी नहीं.)

गोपी: ए भइया.

बाघा: ए भइया.

(दोनों भाग कर उसे पकड़ते हैं.)

गोपी: क्यूं भइया, यह कौन सा देश है?

(बच्चा चुप रहता है.)

बाघा: डरो नहीं, हम तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे.

(बच्चा इशारों से बात करता है, गूंगे जैसा.)

गोपी: गूंगा है बेचारा.

बाघा: जाओ बेटे, शाबाश. पुच पुच पुच, पुच पुच.

(बच्चा जाता है. एक, एक करके बहुत से लोग आते हैं. सब इशारों से बात करते हैं. गूंगों की आवाज़ें निकालते हैं, सब भाग जाते हैं.)

गोपी: लगता है यहां पर सब लोग गूंगे हैं.

बाघा: अब क्या किया जाये?

गोपी: मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता.

बाघा: सब कैसे भाग गये.

(लोग जिधर निकले, उधर जाता है.)

अरे गोपी देख तो! सब लोग वापस आ रहे हैं. भागते हुए हमारी तरफ आ रहे हैं.

(सब लोग दोबारा आते हैं. उनके आगे–आगे उनका राजा है.)

राजा: नमस्कार.

गोपी/बाघा: नमस्कार.

राजा: मैं यहां का राजा हूं, आपके आने से बहुत खुशी हुई.

बाघा: राजाजी आपके देश के सभी लोग क्या गूंगे हैं?

राजा: पहले सब बोलते थे. हंसते थे. बढिया गाते भी थे. पर अब सब गूंगे हो गये हैं, कई साल पहले मैं देश के बाहर गया था, तब एक बदमाश जादूगर यहां आया, उसने जादू की हवा चला दी, और सब लोग गूंगे हो गये.

गोपी: क्या इसका कोई इलाज नहीं हैं?

बाघा: हम सबकी मदद करना चाहते हैं.

राजा: हां इलाज है, अगर कोई अच्छा गायक यहां आकर गाना गाये और कोई अच्छा उस्ताद यहां ढोल बजाये तो मेरे लोगों की आवाज़ें फिर लौट आयेंगी.

गोपी: राजाजी मैं गा कर देखूं?

बाघा: और मैं बजाऊं?

राजा: हां हां जरूर, जरूर.

गोपी: हम गाना गा कर शाप मिटायेंगे.

जादू के असर को दूर भगायेंगे.
हम सीधे सादे गोपी बाघा दूर देश से आये.
ढोलक पर सुन्दर ताल बजायें, मीठे सुर में गायें.
परजा-महाराजा
सारे मिल के साथ में गाओ.
शाप से अपना हाथ छुड़ाओ.
ऊंचे सुर में गाते जाओ.
—भाई, मेरे भाई
बोलो—सा

सब: सा—
गोपी: रे
सब: रे
गोपी: गा
सब: गा
गोपी: सा रे गा मा पा धा नि सा
सब: सारे गा मा पा धा नि सा
गोपी: सारे गा मा पा धा नि सा
सा नि धा पा मा गा रे सा

(सब ताली बजाकर नाचते हैं और हंसते हैं.)